EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
By- Nikhil Ranjan

Useful For Prelims

Date: 29 December 2025

रामानंद सागर ने टीवी के जरिये घर-घर पहुंचाई भगवान श्रीराम की लीला

रामायण और श्रीकृष्ण जैसे ऐतिहासिक शो बनाने वाले निर्देशक रामानंद सागर (चंद्रमौली चोपड़ा) का जन्म 1917 में आज ही अविभाजित भारत के लाहौर (अब पाकिस्तान में) हुआ था। फिल्मों में उनकी शुरुआत 1936 में क्लैपर बाय के रूप में हुई। बाद में पृथ्वी थिएटर से जुड़ गए। 1950 में प्रोडक्शन कंपनी सागर फिल्म्स की स्थापना की। आंखें, पैगाम और गीत जैसी कई फिल्में बनाने के बाद 1985 में छोटे पर्दे की ओर रुख किया और टीवी धारावाहिक रामायण बनाया। इसकी अपार सफलता ने उन्हें अमर कर दिया। 12 दिसंबर 2005 को रामानंद सागर का निधन हो गया।

Dainik Jagaran Page No-14

कलकत्ता में रखी गई भारत की पहली मेट्रो ट्रेन की आधारशिला

1972 में आज ही कलकत्ता (अब कोलकाता में) तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भारत की पहली मेट्रो ट्रेन की आधारशिला रखी थी। 24 अक्टूबर, 1984 को मेट्रो रेलवे का परिचालन शुरू हुआ। पहली मेट्रो एस्प्लेनेड से भवानीपुर तक चलाई गई थी।

सेना में शामिल हुआ देश का पहला स्वदेशी युद्धक टैंक विजयंत

1965 में आज ही भारत ने पहला स्वदेश निर्मित युद्धक टैंक विजयंत को सेना में शामिल किया था। 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध के दौरान भारत ने इसकी आवश्यकता महसूस की थी। विजयंत टैंक ने 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारत की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

Dainik Jagaran Page No-14

संगीतायन

यतीन्द्र मिश्र
अयोध्या, उत्तर प्रदेश

नाट्य संगीत के विलक्षण कलाकार

लता मंगेशकर को जिन्होंने सुरों के संस्कार दिए, वे थे उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर, जो न सिर्फ शास्त्रीय गायक थे, बल्कि उन्होंने नाट्य संगीत को आकार दिया। आज उनकी जन्मजयंती पर विशेष...

कोंकण क्षेत्र मंगेशी, गोआ में जन्मे मास्टर दीनानाथ मंगेशकर को मराठी नाट्य संगीत और भारतीय शास्त्रीय संगीत का दिग्गज कलाकार माना जाता है। वह मराठी रंगमंच, नाट्य संगीत, भाव-गीत के उन आरंभिक कलाकारों में हैं, जिन्होंने इस परंपरा को रचने की लीक बनाई। वे जब 14 वर्ष की उम्र में गोआ से महाराष्ट्र आए, तब उन्होंने किर्लोस्कर नाटक मंडली में प्रवेश किया। उस समय मराठी नाट्य संगीत से समृद्ध रंगमंचीय प्रस्तुतियों के लिए पुणे, सांगली, मिरज, कोल्हापुर जैसे नगर एक बड़े प्लेटफार्म की तरह उभर रहे थे। कृष्णजी प्रभाकर खाडीलकर द्वारा लिखित 'मानापमान' नाटक की पहली प्रस्तुति भी इसी कंपनी ने रची थी, जिसे 1911 में पहली बार मंच पर बालगंधर्व ने प्रस्तुत किया और बाद में इसी नाटक से दीनानाथ मंगेशकर प्रसिद्धि के शिखर पर आए, जिसे उन्होंने 'बलवंत संगीत मंडली' द्वारा नए ढंग से प्रस्तुत किया। किर्लोस्कर

पंडित दीनानाथ मंगेशकर
(29 दिसंबर, 1900; 24 अप्रैल, 1942)

कंपनी से कुछ वर्षों तक नाता जोड़े रखने के उपरांत जब पं. दीनानाथ मंगेशकर अलग हुए, तब उन्होंने अपने मित्र चिंतामणि राव कोल्हटकर और कृष्णराव कोल्हापुरे के साथ मिलकर 'बलवंत संगीत मंडली' बनाई। 'मानापमान' नाटक के सर्वाधिक लोकप्रिय गीत का सेहरा 'शूरा मी वंदीले' के सिर पर बंधा, जो इतिहास बन गया। जबकि इससे पहले नाटक की पोथी में लिखे इस गीत को दीनानाथ मंगेशकर के अलावा किसी ने भी इस्तेमाल नहीं किया था।

उन दिनों 'बलवंत संगीत मंडली' के लिए अपार प्रसिद्धि लेकर आने वाले नाटकों में 'रणदुंदुभी', 'संन्यस्त खड्ग', 'भाव बंधन' अत्यंत लोकप्रिय हुए। इन नाटकों के माध्यम से पंडित जी शिखर कलाकार के रूप में मान्य हो गए। बालगंधर्व ने तो यहां तक कहा- 'अगर दीनानाथ मेरी नाटक मंडली में शामिल हो जाते हैं, तो मैं उनकी राह में गुलाब सजाकर उन्हें लेकर आऊंगा'। ग्वालियर घराने के पंडित रामकृष्ण बुवा वझे के गंडाबंध शागिर्द दीनानाथ जी, पहली बार मराठी रंगमंच में कर्नाटक और पंजाब का संगीत लेकर आए। उन्होंने कर्नाटक जाकर संगीत सीखा, जिसे नाटकों में नए प्रयोगों के तहत ढाला। उनके गाए हुए पसंदीदा रागों में हिंडोल, जयजयवंती, भूपाली, दरबारी कान्हड़ा, शंकरा और यमन प्रमुख हैं।

दीनानाथ मंगेशकर ने उपर्युक्त संदर्भित नाटकों के अलावा 'उग्र-मंगल', 'त्राटिका', 'देशकंटक' और 'रामराज्य वियोग' जैसे नाटकों से भी प्रसिद्धि पाई। यह जानना भी दिलचस्प है कि 'किर्लोस्कर नाटक मंडली' से शुरू हुई पं. दीनानाथ मंगेशकर की भावमयी सांगीतिक यात्रा 'बलवंत संगीत मंडली' से अपने चरम पर जा पहुंची थी। मात्र 41 वर्ष की आयु में उनके निधन से उस बड़े कैनवास के मराठी रंगमंच का सितारा असमय डूब गया, जिसमें उनके समकालीन बालगंधर्व, चिंतामनराव कोल्हटकर, रामगणेश गडकरी और पंडित जितेन्द्र अभिषेकी जैसे मूर्धन्य शामिल थे।

yatindrapost@gmail.com

दैनिक जागरण
सप्तरंग
साहित्य और संगीत का
सोमवार, 29 दिसंबर, 2025

विनोद कुमार शुक्ल की भाषा में गहरे मानवीय भाव और जीवन के सूक्ष्म अनुभव थे। उन्होंने गद्य को भी मुहावरेदार काव्यात्मक भाषा दी। वह यथार्थ को जीते हुए भी एक स्वप्नलोक रचते थे। उनके पात्र जीवन संघर्षों में भी नैतिकता का त्याग नहीं करते। वह संसार से चले गए, लेकिन साहित्य में संभावनाओं की एक खिड़की खोल गए हैं...

भावांजलि

शशांक शर्मा
रायपुर, छत्तीसगढ़

साहित्य की दीवार में खिड़की

स्मृति शेष : विनोद कुमार शुक्ल (एक जनवरी, 1937 – 23 दिसंबर, 2025)

कथाकार, कवि और उपन्यासकार विनोद कुमार शुक्ल ने अपने अंतिम समय तक लेखनी का साथ नहीं छोड़ा। जब देह ने लेखनी से दूरी बनाई तो दुनिया छोड़ चल दिए। विनोद कुमार शुक्ल की 55 वर्षों की रचना यात्रा अंततः 23 दिसंबर को थम गई।

शुक्ल जी का प्रत्येक श्वास मानो लेखन को समर्पित रहा। अस्पताल में भर्ती होने के बाद इंडिया टुडे के साहित्य विशेषांक के लिए उन्होंने अपना लेख पूर्ण किया था। जब वे दोबारा भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर में भर्ती हुए, तब उनके स्वास्थ्य की स्थिति चिंताजनक हो चुकी थी। डाक्टर ने उनसे पूछा- वे उनके लिए क्या कर सकते हैं? शुक्ल जी ने कागज और कलम मांग कर लिखने की इच्छा जताई। छह दिसंबर को उनके द्वारा लिखित अंतिम तीन पंक्तियों की कविता बनी -'बत्ती मैंने पहले बुझाई/फिर तुमने बुझाई/ फिर दोनों ने मिलकर बुझाई।'

विरले साहित्यकार होते हैं, जो पद्य और गद्य दोनों में प्रभावी दखल रखते हैं। उनकी भाषा सरल थी। इस सरल भाषा के भीतर गहरे मानवीय भाव और जीवन के सूक्ष्म अनुभवों को साथ लेकर चलने की गहरी शक्ति थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में निम्न-मध्यम वर्ग के जीवनमूल्यों, आम लोगों और उनके भीतरी संसार को अनोखे तरीके से प्रस्तुत किया। विनोद जी हिंदी भाषा के नवोन्मेषी लेखक थे, जिन्होंने अनेक शब्द गढ़े। सही मायने में वे शब्दों के जादूगर थे। हिंदी कविता में वे अपने भिन्न मुहावरों के लिए विख्यात रहे।

विनोद कुमार शुक्ल की कविताएं साधारण जीवन का दस्तावेज हैं। उनमें बनावटीपन नहीं है। वह किसी भी तरह की अतिशयता से बचते हुए यथार्थ को बिना लाग-लपेट के व्यक्त करते थे। उनकी कविताओं के विषय हमारे आसपास के रहे, जिनसे हम सीधा जुड़ जाते हैं। विनोद कुमार शुक्ल का अपना भिन्न काव्य मुहावरा था, जिसमें अक्सर तथ्य के किसी अंश का दोहराव कविता को सघन बनाता है।

एक विरले कवि होने के साथ ही विनोद कुमार शुक्ल महत्वपूर्ण कथाकार भी थे। उनके उपन्यासों व कहानियों ने हिंदी कथा साहित्य में विशिष्ट प्रतिष्ठा अर्जित की है। 'नौकर की कमीज' उनका पहला उपन्यास था। इस कृति ने हिंदी में एक नए उपन्यास शिल्प तथा नई कथाभाषा आरंभ की। इस उपन्यास में संतु बाबू अपर्याप्त जीवन साधनों के बीच निम्न-मध्यवर्ग के जीवन की समस्याओं से लगातार जूझते हैं। किराये का मकान, कम हैसियत की नौकरी तथा एक हद तक गरीबी।

उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' में भी निम्न-मध्यवर्गीय जीवन को नए प्रतीकों में उकेरा है। उपन्यास में महाविद्यालय के अध्यापक रघुवर प्रसाद की दुनिया यथार्थ तथा स्वप्न की मिली-जुली दुनिया है, जिसमें वे यथार्थ को जीते हुए भी एक स्वप्नलोक रचते हैं। इस उपन्यास में एक उम्मीद है, जिसमें निम्न-मध्यवर्गीय जीवन को सीमित करने वाली दीवारों में एक व्यक्ति अपनी कल्पना से वह खिड़की खोल सकता है, जो उसकी जीवन दृष्टि को विस्तार दे।

उनके उपन्यासों की तरह उनकी कहानियां भी हिंदी कहानी की प्रचलित धारणा को ध्वस्त कर एक नए विधान के रूप में सामने आती हैं। इन कहानियों में निम्न-मध्यवर्गीय जीवन की छोटी-छोटी चिंताओं, समस्याओं, अविश्वासों, शोषण, आकांक्षा, मनोविज्ञान तथा काल्पनिक संसार वर्णित होता है।

शुक्ल जी भाषा वैज्ञानिक की तरह शब्द को लय में बदल देने की कला में माहिर थे, क्योंकि उनकी शिक्षा कृषि विज्ञान में हुई। उन्होंने रायपुर स्थित जवाहरलाल नेहरू कृषि महाविद्यालय में प्राध्यापकीय कार्य किया। भाषा के संस्कार और विज्ञान की शिक्षा के कारण शुक्ल जी के लेखन में इन दोनों का अद्भुत मिश्रण दिखाई पड़ता है। शहर में पले-बढ़े, नौकरी की, किंतु उनके लेखन में गांव सा भोलापन है। यह केवल भाषा और शब्दों में नहीं, अपितु उनके जीवन में भी देखने को मिलता है। शुक्ल जी के उपन्यास या कहानियों के पात्रों में जो सरलता, सहजता, मितव्ययिता का पालन करने का गुण दिखता है, दरअसल वे गुण शुक्ल जी के चरित्र के मूल में थे। शुक्ल जी की रचनाओं की एक और बड़ी विशेषता यह है कि समाज में गरीब, मजदूर, निम्न वर्ग के विषयों पर लिखते हुए भी कभी भी व्यवस्था के विरुद्ध अराजक स्वर सुनाई नहीं देते। उनकी रचनाओं के मुख्य पात्र आर्थिक संघर्ष करते हुए भी नैतिकता को नहीं छोड़ते। उनके संघर्ष में एक उम्मीद बरकरार रहती है।

विनोद कुमार शुक्ल मौनी साहित्यकार थे, बहुत कम बोलते थे, नपे-तुले शब्दों में, जबकि उनके कथा साहित्य में संवाद बहुत ज्यादा मिलते हैं। ये संवाद चरित्रों के थोड़ा-बहुत बातूनी होने की ओर संकेत करते हैं। ऐसा लगता है मानो विनोद जी बोलने में शब्द खर्च न करते हुए अपनी रचनाओं में निवेश कर देते थे।

विनोद कुमार शुक्ल जी ने गद्य में काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया था, जिसमें रहस्यात्मकता, बिंबात्मकता, संगीतात्मकता, विचारात्मकता की प्रधानता है। इन विशिष्टताओं के चलते विनोद कुमार शुक्ल हिंदी कथा साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाते हुए अनंत यात्रा पर निकल गए और नई पीढ़ी को बता गए कि साहित्य में नवीनता की बहुत संभावना है। यह संभावना इसलिए, क्योंकि वह साहित्य की दीवार में खिड़की खोल गए हैं।

shasha.raipur@gmail.com
(लेखक साहित्य अकादमी, छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष हैं।)

प्रमुख कृतियां व सम्मान

कविता संग्रह : लगभग जयहिंद, वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह, सब कुछ होना बचा रहेगा, अतिरिक्त नहीं, कविता से लंबी कविता, कभी के बाद अभी।

कहानी संग्रह : पेड़ पर कमरा, महाविद्यालय।

उपन्यास : नौकर की कमीज, दीवार में एक खिड़की रहती थी, खिलेगा तो देखेंगे, हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़।

फिल्मांकन : 'नौकर की कमीज' पर मणि कौल द्वारा फिल्म निर्माण। 'आदमी की औरत' सहित कुछ कहानियों पर बनी इसी नाम की फिल्म को वेनिस फिल्म उत्सव -2009 में स्पेशल इवेंट पुरस्कार।

सम्मान व पुरस्कार : ज्ञानपीठ, राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, शिखर सम्मान (म.प्र. शासन), हिंदी गौरव सम्मान (उ. प्र.हिंदी संस्थान), रजा पुरस्कार, दयावती मोदी कवि शिखर सम्मान, रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार, दीवार मे एक खिड़की रहती थी के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा अंतरराष्ट्रीय साहित्य मे उपलब्धि के लिए 2023 के 'पेन अमेरिका नाबोकोव अवार्ड' से सम्मानित।

Dainik Jagaran Page No-13

शुल्क समेत कई मुद्दों पर बनी उम्मीद | विश्लेषण | ट्रंप के अगले साल भारत आने की संभावना

बेहतर होंगे भारत और अमेरिका के संबंध

न्यूयार्क/वाशिंगटन, 28 दिसंबर (भाषा)।

दंडात्मक शुल्क, पाकिस्तान के साथ संघर्ष और कठोर अप्रवासन नीतियों के कारण 2025 में अमेरिका और भारत के संबंध उतार-चढ़ाव से भरे रहे हैं, लेकिन आने वाले समय में भारत और अमेरिका के बीच संबंध के बेहतर होने की उम्मीद है।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा और दोनों देशों के बीच 10 वर्षीय रक्षा ढांचा समझौते पर हस्ताक्षर को रिश्तों के उच्चतम स्तर के रूप में देखा गया। अमेरिका और भारत के संबंधों के लिहाज से इस साल की शुरुआत बहुत अच्छी रही और मोदी ने फरवरी में वाशिंगटन की यात्रा कर वाइट हाउस (अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय) में ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में उनके साथ पहली द्विपक्षीय बैठक की।

ट्रंप के 47वें अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेने के कुछ ही हफ्तों के भीतर इजराइल, जापान और जर्डन के नेताओं के बाद मोदी उनसे मुलाकात करने वाले चौथे विदेशी गणमान्य व्यक्ति थे। ट्रंप और मोदी ने पारस्परिक रूप से लाभकारी, बहु-क्षेत्रीय द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के पहले चरण में 2025 में बातचीत करने की योजना की घोषणा की, जिसका लक्ष्य 2030 तक व्यापार को दोगुना से अधिक बढ़ाकर 500 अरब अमेरिकी डालर करना है। इससे एक महीने पहले, विदेश मंत्री एस जयशंकर ने 21 जनवरी को ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए अमेरिकी संसद भवन (यूएस कैपिटल) में अग्रिम पंक्ति में बैठकर कार्यक्रम में भाग लिया था और इसके कुछ घंटे बाद नए विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने जयशंकर समेत चतुष्पक्षीय सुरक्षा संवाद (क्वाड) के सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक की मेजबानी की। लेकिन जैसे-जैसे महीने बीतते गए, द्विपक्षीय संबंध जो पूरी गति से आगे बढ़ रहे थे, उन्हें शुल्क और व्यापार को लेकर मतभेदों के रूप में बाधाओं का सामना करना पड़ा। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे डी वेंस ने भारत की यात्रा कर प्रधानमंत्री मोदी के साथ व्यापक बातचीत की। इस दौरान दोनों देशों ने पारस्परिक रूप से लाभकारी द्विपक्षीय व्यापार समझौते की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रगति की। वाशिंगटन ने मुक्त और खुले हिंद-प्रशांत को सुनिश्चित करने में नई दिल्ली के साथ निकटता से काम करने की प्रतिबद्धता जताई।

भारत और अमेरिका के संबंधों में जटिलताओं के बावजूद सहयोग के कुछ ऐसे क्षेत्र भी थे जो विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे। अमेरिका ने आतंकवाद के खिलाफ सहयोग को दर्शाते हुए 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों के आरोपी तहव्वुर हुसैन राणा को भारत को प्रत्यर्पित किया। इसके अलावा, अमेरिका ने 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' को विदेशी आतंकवादी संगठन घोषित किया।

विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने कहा कि मोदी ने ट्रंप को स्पष्ट संदेश दिया कि 'आपरेशन सिंदूर' के बाद 'किसी भी समय' और किसी भी स्तर पर भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर या भारत और पाकिस्तान के बीच अमेरिका की मध्यस्थता के किसी प्रस्ताव पर कोई चर्चा नहीं हुई।

मोदी ने हाल में कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप के साथ उनकी बहुत गर्मजोशी भरी और सार्थक बातचीत हुई तथा उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों में प्रगति की समीक्षा की और क्षेत्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों पर चर्चा की। मोदी ने कहा कि भारत और अमेरिका वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए मिलकर काम करते रहेंगे। मोदी को अच्छे मित्र और महान प्रधानमंत्री बताने वाले राष्ट्रपति ट्रंप अगले साल भारत आ सकते हैं।

Jansatta Page No-12

पनडुब्बी में सवार हुईं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, आइएनएस वाघशीर से की समुद्री यात्रा

तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के बाद ऐसा करने वाली दूसरी राष्ट्रपति बनीं

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 28 दिसंबर।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने रविवार को पश्चिमी तट पर स्वदेशी रूप से निर्मित पनडुब्बी आइएनएस वाघशीर पर दो घंटे से अधिक समय की समुद्री यात्रा की। मुर्मू पनडुब्बी की सवारी का अनुभव करने वाली दूसरी राष्ट्रपति बनीं। इससे पहले फरवरी 2006 में एपीजे अब्दुल कलाम ने आइएनएस सिंधु रक्षक पर इसी तरह की सवारी की थी।

अधिकारियों के अनुसार, कर्नाटक के कारवार नौसैनिक अड्डे से कलवरी श्रेणी की इस 'साइलेंट सेंटिनल' पनडुब्बी में हुई दो घंटे से अधिक की यात्रा के दौरान नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी राष्ट्रपति के साथ मौजूद थे। राष्ट्रपति सशस्त्र बलों की सर्वोच्च कमांडर भी हैं। बाद में आगंतुक पुस्तिका में लिखते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि नौसैनिकों और अधिकारियों के साथ 'यात्रा करने, गोता लगाने और समय बिताने' का अनुभव उनके लिए 'बहुत विशेष' रहा। उन्होंने लिखा, 'आइएनएस वाघशीर द्वारा किए गए कई सफल परीक्षण व चुनौतीपूर्ण अभियान चालक दल की असाधारण तत्परता और समर्पण को दर्शाते हैं, जो उसके आदर्श वाक्य 'वीरता वर्चस्व विजय' के अनुरूप है।'

उन्होंने कहा, 'वाघशीर के चालक दल के अनुशासन, आत्मविश्वास और उत्साह को देखकर मुझे पूरा भरोसा है कि हमारी पनडुब्बियां और भारतीय नौसेना किसी भी खतरे और हर परिस्थिति में मुकाबले के लिए तैयार हैं।' राष्ट्रपति सचिवालय ने कहा कि पनडुब्बी पर राष्ट्रपति की उपस्थिति यह दर्शाती है कि सर्वोच्च कमांडर का सशस्त्र बलों के साथ परिचालन स्तर पर निरंतर जुड़ाव बना हुआ है। पिछले वर्ष नवंबर में राष्ट्रपति ने स्वदेशी विमानवाहक पोत आइएनएस विक्रांत पर भारतीय नौसेना के एक परिचालन प्रदर्शन को भी देखा था। राष्ट्रपति को भारत की समुद्री रणनीति में पनडुब्बी बल की भूमिका, उसकी परिचालन क्षमताओं और राष्ट्रीय समुद्री हितों की रक्षा में उसके योगदान के बारे में जानकारी दी गई।

सचिवालय ने सोशल मीडिया मंच पर जारी पोस्ट में बताया, 'राष्ट्रपति ने कहा कि यह स्वदेशी पनडुब्बी भारतीय नौसेना की व्यावसायिक उत्कृष्टता, युद्ध की तैयारी और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का एक शानदार उदाहरण है।' पी75 स्कार्पीन परियोजना की छठी और अंतिम पनडुब्बी, आइएनएस वाघशीर को इस साल जनवरी में नौसेना में शामिल किया गया था।

नौसेना अधिकारियों के मुताबिक, यह दुनिया की सबसे शांत और बहु-उद्देशीय डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों में से एक है। इसे कई तरह के मिशन को अंजाम देने के लिए तैयार किया गया है, जिनमें सतह पर मौजूद दुश्मन से लड़ाई, पनडुब्बी-रोधी अभियान, खुफिया जानकारी जुटाना, क्षेत्र की निगरानी और विशेष अभियान शामिल हैं। यह 'वायर-गाइडेड टारपीडो', पोत-रोधी मिसाइलों और उन्नत सोनार प्रणालियों से लैस है।

यह पनडुब्बी माड्यूलर निर्माण तकनीक पर आधारित है, जिससे भविष्य में इसे एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआइपी) तकनीक जैसी प्रौद्योगिकियों से एकीकृत करने की सहूलियत मिलती है। भारतीय नौसेना हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के दीर्घकालिक सुरक्षा हितों को ध्यान में रखते हुए कारवार नौसेना अड्डे को विकसित कर रही है।

आइएनएस वाघशीर में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के साथ नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी।

नए साल की शुरूआत में दो नए युद्धपोत मिलेंगे

नए साल की शुरुआत में भारतीय नेवी को दो नए युद्धपोत मिलेंगे। तारागिरी और अंजदीप। तारागिरी नीलगिरी क्लास का फ्रिगेट और अंजदीप शैलो वाटर क्राफ्ट है। ये दोनों ही वारशिप जनवरी में नेवी में शामिल किया जा सकता है।

आइएनएस वाघशीर की खासियत

पी75 स्कार्पीन परियोजना की छठी और अंतिम पनडुब्बी, आइएनएस वाघशीर को इस साल जनवरी में नौसेना में शामिल किया गया था। नौसेना अधिकारियों के मुताबिक यह दुनिया की सबसे शांत और बहु उद्देशीय डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों में से एक है। इसे कई तरह के मिशन को अंजाम देने के लिए तैयार किया गया है, जिनमें सतह पर मौजूद दुश्मन से लड़ाई, पनडुब्बी रोधी अभियान, खुफिया जानकारी जुटाना, क्षेत्र की निगरानी और विशेष अभियान शामिल हैं। यह 'वायर-गाइडेड टारपीडो', पोत रोधी मिसाइलों और उन्नत सोनार प्रणालियों से लैस है। यह पनडुब्बी माड्यूलर निर्माण तकनीक पर आधारित है जिससे भविष्य में इसे एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआइपी) तकनीक जैसी प्रौद्योगकियों से एकीकृत करने की सहूलियत मिलती है। भारतीय नौसेना हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के दीर्घकालिक सुरक्षा हितों को ध्यान में रखते हुए कारवार नौसेना अड्डे को विकसित कर रही है।

Jansatta Page No-12

बांग्लादेश चुनाव से पहले जमात से गठबंधन पर एनसीपी में फूट

पार्टी के 30 नेताओं ने गठबंधन का विरोध किया, दो सदस्यों ने इस्तीफे की घोषणा की

बोले – जमात भरोसेमंद नहीं, उससे समझौता करने पर भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है

तसनीम जारा। समंता शर्मिन। फाइल

ढाका, एएनआइ : बांग्लादेश में फरवरी में होने वाले चुनावों से पहले जमात-ए-इस्लामी के साथ प्रस्तावित गठबंधन को लेकर छात्र नेतृत्व वाली नेशनल सिटीजन पार्टी (एनसीपी) में सर्वोच्च आंतरिक फूट पड़ गई। पार्टी के 30 नेताओं ने संयुक्त रूप से एक पत्र जारी कर जमात से गठबंधन की योजना का विरोध किया और दो वरिष्ठ सदस्यों ने अपने इस्तीफे की घोषणा कर दी। इस मुद्दे पर दर्जनों नेताओं ने सामूहिक इस्तीफे की भी धमकी दी है। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के नेतृत्व वाली अवामी लीग सरकार के खिलाफ 2024 के छात्र-नेतृत्व वाले विरोध प्रदर्शनों से उभरी एनसीपी का चुनावों से पहले एक मजबूत राजनीतिक आधार स्थापित करने का सपना टूटता हुआ नजर आ रहा है।

एनसीपी की प्रमुख नेताओं में से एक तसनीम जारा ने घोषणा की है कि वह पार्टी की उम्मीदवारी को अस्वीकार कर रही हैं और अगले साल फरवरी में होने वाले आगामी चुनावों में ढाका-9 से स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ेंगी।

उन्होंने फेसबुक पोस्ट में लिखा, "मेरा सपना किसी राजनीतिक दल के मंच से संसद में प्रवेश करना और अपने निर्वाचन क्षेत्र तथा देश के लोगों की सेवा करना था। हालांकि, मौजूदा परिस्थितियों के कारण मैंने किसी विशिष्ट दल या गठबंधन के उम्मीदवार के रूप में चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया है।"

नेशनल सिटीजन पार्टी (एनसीपी) की एक अन्य वरिष्ठ नेता समंता शर्मिन ने जमात-ए-इस्लामी के साथ एनसीपी के गठबंधन का विरोध करते हुए एक बयान जारी किया है। उन्होंने कहा, "बांग्लादेश जमात-ए-इस्लामी एक भरोसेमंद सहयोगी नहीं है। मेरा मानना है कि जमात-ए-इस्लामी की राजनीतिक स्थिति और विचारधारा को देखते हुए उसके साथ किसी भी प्रकार का सहयोग या समझौता करना एनसीपी को भारी कीमत चुकाने पर मजबूर करेगा। यह आगे चलकर भारी पड़ेगा।"

अमेरिकी सांसद ने दीपू की 'भयावह' हत्या की निंदा की

न्यूयार्क, प्रेट्र : भारतीय-अमेरिकी सांसद रो खन्ना ने बांग्लादेश में मेमनसिंह जिलान्तर्गत बलुका में हिंदू युवक 27 वर्षीय दीपू चंद्र दास की पीट-पीटकर हत्या किए जाने की कड़ी निंदा की है। उन्होंने वैश्विक समुदाय से ऐसे "घृणा और कट्टरता के घृणित कृत्यों" के खिलाफ आवाज उठाने और बांग्लादेश से अल्पसंख्यकों की रक्षा करने का आग्रह किया है। सिलिकान वैली के मध्य में स्थित कैलिफोर्निया के 17वें कांग्रेसनल डिस्ट्रिक्ट का प्रतिनिधित्व करने वाले डेमोक्रेटिक सांसद ने अपने एक्स पोस्ट में दीपू की हत्या को "भयावह" बताया।

बांग्लादेश पुलिस का दावा- मेघालय के रास्ते भारत भागे हादी के हत्यारे, बीएसएफ ने नकारा

- कहा, संदिग्ध हलुआघाट सीमा के रास्ते भारत में दाखिल हुए
- बीएसएफ ने बांग्लादेश पुलिस के दावे को खारिज किया

शरीफ उस्मान हादी। फाइल

ढाका, प्रेट्र : बांग्लादेश पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने रविवार को दावा किया कि इंकलाब मंचो नेता शरीफ उस्मान हादी की हत्या के दो मुख्य संदिग्ध मेघालय के रास्ते भारत भाग गए हैं। हमलावरों ने 12 दिसंबर को हादी को ढाका में चुनाव प्रचार के दौरान गोली मार दी थी। उसे इलाज के लिए सिंगापुर ले जाया गया, लेकिन 18 दिसंबर को उसकी मौत हो गई। मेघालय में बीएसएफ के महानिरीक्षक ओपी उपाध्याय ने इन दावों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश के दावे पूरी तरह निराधार और भ्रामक हैं।

ढाका महानगर पुलिस (डीएमपी) के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध और संचालन) एस एन मोहम्मद नजरुल इस्लाम ने कहा, "संदिग्ध फैसल करीम मसूद और आलमगीर शेख स्थानीय सहयोगियों की मदद से भारत के मेघालय राज्य में घुस गए।" द डेली स्टार ने इस्लाम के हवाले से बताया, "हमारी जानकारी के अनुसार, संदिग्ध हलुआघाट सीमा के रास्ते भारत में दाखिल हुए। सीमा पार करने के बाद, उन्हें पहले पूर्ति नाम के एक व्यक्ति ने रिसीव किया। बाद में, सामी नाम के टैक्सी चालक ने मेघालय के तुरा शहर तक पहुंचाया।"

उन्होंने कहा कि पुलिस को अनौपचारिक सूचना मिली है कि फरार आरोपितों की मदद करने वाले दो व्यक्ति, पूर्ति और सामी, भारत में अधिकारियों द्वारा हिरासत में ले लिए गए हैं। बांग्लादेश सरकार संदिग्धों को वापस लाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही है। उन्होंने कहा, "हम उनकी गिरफ्तारी और प्रत्यर्पण सुनिश्चित करने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक दोनों माध्यमों से भारतीय अधिकारियों के साथ संपर्क में हैं।" हालांकि, पुलिस अधिकारी ने यह नहीं बताया कि दोनों भारत कब भागे। उन्होंने आगे कहा कि हत्या को अंजाम देने में भारी मात्रा में धन खर्च किया गया था और जांच के दौरान 218 करोड़ टका का हस्ताक्षरित चेक जब्त किया गया है।

वहीं, रविवार को इंकलाब मंचो के नेताओं और समर्थकों ने ढाका के शाहबाग चौराहे पर नाकाबंदी की। वे शरीफ उस्मान हादी के लिए न्याय की मांग कर रहे थे।

Dainik Jagaran Page No-11

रूस से तीन ईरानी उपग्रह लांच

दुबई, रायटर : रूस के सोयुज राकेट से रविवार को तीन ईरानी उपग्रह अंतरिक्ष में भेजे गए। अमेरिका द्वारा प्रतिबंधित इन दोनों देशों के बीच अंतरिक्ष सहयोग और मजबूत हो रहा है। ये उपग्रह पाया, जफर 2 और दूसरा कौसर हैं।

हाल के वर्षों में, ईरान उपग्रहों को कक्षा में स्थापित करने के लिए रूस पर तेजी से निर्भर रहा है। नवीनतम तीन उपग्रह कृषि, प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण की निगरानी में मदद करने के उद्देश्य से भेजे गए हैं। ईरान के रूस में राजदूत काजेम जलाली ने बताया, "सभी प्रतिबंधों और धमकियों के बावजूद ये उपग्रह ईरानी विज्ञानियों द्वारा डिजाइन और निर्मित किए गए हैं।" उन्होंने तेहरान के परमाणु कार्यक्रम पर पश्चिमी देशों द्वारा उठाए गए कदमों का जिक्र भी किया। उन्होंने कहा, "हम (रूस के साथ) विभिन्न क्षेत्रों में मिलकर काम कर रहे हैं। कुछ क्षेत्र स्पष्ट हैं और कुछ के बारे में हम स्पष्टीकरण नहीं देना चाहते।" इस लांच के माध्यम से, ईरान वैज्ञानिक और तकनीकी विकास को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है।

Dainik Jagaran Page No-11

जी-रामजी में काम नहीं तो भत्ता की होगी गारंटी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- स्पष्ट किया गया है कि यदि सरकार समय पर काम नहीं दे पाती है तो उसे भत्ता देना ही होगा
- बेरोजगारी भत्ते को सरकारी सहायता नहीं, बाध्यकारी अधिकार के रूप में किया गया है परिभाषित

श्रमिक हितैषी प्रविधान। प्रतीकात्मक

ग्रामीण भारत में रोजगार की अनिश्चितता से जूझ रहे परिवारों के लिए विकसित भारत रोजगार और आजीविका के लिए गारंटी मिशन (ग्रामीण), यानी जी-रामजी अधिनियम बड़ा भरोसा बनकर सामने आया है। इसमें पहली बार बेरोजगारी भत्ते को केवल सरकारी सहायता नहीं, बल्कि स्पष्ट और बाध्यकारी अधिकार के रूप में परिभाषित किया गया है। इसमें स्पष्ट किया गया है कि यदि सरकार समय पर काम नहीं दे पाती है तो उसे भत्ता देना ही होगा।

कानून के तहत किसी भी पात्र परिवार का वयस्क सदस्य जब योजना के अंतर्गत रोजगार की मांग करता है तो राज्य सरकार की जिम्मेदारी बन जाती है कि उसे समय पर काम उपलब्ध कराए। कानून में इसके लिए 15 दिनों की स्पष्ट समय-सीमा तय की गई है। यानी आवेदन मिलने की तारीख से या जिस तारीख से काम मांगा गया है, उसके 15 दिनों के भीतर यदि रोजगार नहीं मिलता है तो आवेदक स्वतः दैनिक बेरोजगारी भत्ते का हकदार हो जाता है।

भत्ते की दर तय करने का अधिकार भले ही राज्य सरकारों को दिया गया हो, लेकिन कानून ने इसमें मनमानी की संभावना खत्म कर दी है। अधिनियम में न्यूनतम सीमा साफ-साफ तय की गई है। वित्तीय वर्ष के पहले 30 दिनों के लिए बेरोजगारी भत्ता संबंधित क्षेत्र की निर्धारित मजदूरी दर के एक-चौथाई से कम नहीं होगा। बाद की अवधि के लिए यह मजदूरी दर के आधा या उससे ज्यादा होना अनिवार्य है। इसके साथ ही यदि ग्राम पंचायत या सक्षम प्राधिकारी आवेदक को काम पर रिपोर्ट करने का निर्देश देता है या उसके परिवार के किसी वयस्क सदस्य को रोजगार मिल जाता है तो उस अवधि के लिए भत्ता नहीं दिया जाएगा। किसी वित्तीय वर्ष में यदि परिवार के वयस्क सदस्यों को कम से कम 125 दिन का रोजगार मिल चुका है तो उसके बाद बेरोजगारी भत्ते का दावा नहीं किया जा सकेगा।

Dainik Jagaran Page No-1

रिफार्म एक्सप्रेस पर सवार है भारत : मोदी

मुख्य सचिवों के राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने दिया विकसित भारत का मूलमंत्र, विनिर्माण व कारोबारी सुगमता पर जोर

- प्रधानमंत्री बोले- युवाशक्ति है सुधारों का इंजन, भारत बनेगा वैश्विक सेवा की महाशक्ति
- कृषि और खाद्य निर्यात पर जोर, मेड इन इंडिया को गुणवत्ता की पहचान बनाने का लक्ष्य
- जनसांख्यिकी को सशक्त बनाकर हासिल करेंगे आत्मनिर्भर और विकसित भारत का लक्ष्य

नई दिल्ली, प्रेट्र: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भारत 'रिफार्म एक्सप्रेस' पर सवार हो चुका है और इसका सबसे बड़ा इंजन देश की युवा शक्ति और अनुकूल जनसांख्यिकी है। उन्होंने राज्यों से विनिर्माण को प्रोत्साहित करने, ईज आफ डूइंग बिजनेस को मजबूत करने और सेवा क्षेत्र को नई गति देने का आह्वान करते हुए कहा कि भारत को एक वैश्विक सेवा महाशक्ति बनाने की दिशा में साझा प्रयास जरूरी हैं।

प्रधानमंत्री यहां आयोजित तीन दिवसीय पांचवें राष्ट्रीय मुख्य सचिव सम्मेलन को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि यह सम्मेलन ऐसे समय में हो रहा है, जब देश अगली पीढ़ी के सुधारों का साक्षी बन रहा है। सरकार का प्रयास है कि इस जनसांख्यिकी को सशक्त बनाकर आत्मनिर्भर और विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल किया जाए। सम्मेलन का विषय 'विकसित भारत के लिए मानव पूंजी' था। सम्मेलन के बाद प्रधानमंत्री ने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर एक के बाद एक पोस्ट में कहा कि राज्यों को मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के साथ-साथ कारोबार सुगमता में सुधार और सेवा क्षेत्र को मजबूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा।

नई दिल्ली में रविवार को मुख्य सचिवों के पांचवें राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अन्य विशिष्टजन। प्रेट्र

हर क्षेत्र में गुणवत्ता पर जोर

पीएम मोदी ने अपने संबोधन के दौरान गुणवत्ता पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि शासन, सेवा वितरण और विनिर्माण- हर क्षेत्र में गुणवत्ता को प्राथमिकता बनाना होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'मेड इन इंडिया' को गुणवत्ता का पर्याय बनाने और 'जीरो इफेक्ट, जीरो डिफेक्ट' के प्रति प्रतिबद्धता को और मजबूत करने की जरूरत है।

भारत बन सकता है दुनिया का 'फूड बास्केट'

कृषि और खाद्य क्षेत्र पर बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में दुनिया का 'फूड बास्केट' बनने की अपार क्षमता है। उन्होंने राज्यों से आह्वान किया कि वे उच्च मूल्य वाली कृषि, बागवानी, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन को बढ़ावा दें, ताकि भारत एक प्रमुख खाद्य निर्यातक के रूप में उभर सके।

तीन दिनी सम्मेलन में अहम मुद्दों पर गंभीर चर्चा

प्रधानमंत्री ने कहा कि सम्मेलन के दौरान कौशल विकास, उच्च शिक्षा, युवा सशक्तीकरण और खेल जैसे विषयों पर भी व्यापक चर्चा हुई। साथ ही, शासन और सेवा वितरण में नवीनतम तकनीक के एकीकरण पर जोर दिया गया, ताकि आम लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया जा सके। उन्होंने कहा कि बीते वर्षों में शासन व्यवस्था में एक नई कार्य संस्कृति विकसित करने की दिशा में अहम कदम उठाए गए हैं।

भारत के लिए गर्व व आत्मविश्वास से भरा रहा 2025 : मोदी

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के वर्ष 2025 के अंतिम संस्करण में देश की प्रमुख उपलब्धियों, राष्ट्रीय भावनाओं और आने वाली चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। 129वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने कहा कि बीता वर्ष भारत के लिए गर्व और आत्मविश्वास बढ़ाने वाला रहा है, जिसकी स्मृतियां लंबे समय तक प्रेरणा देती रहेंगी। सुरक्षा, खेल, विज्ञान और वैश्विक मंच पर भारत की सशक्त मौजूदगी स्पष्ट रूप से दिखाई दी है। (पेज-3)

Dainik Jagaran Page No-1

साहस | द्रौपदी मुर्मु ने पनडुब्बी पर तैनात नौसैनाकर्मियों से मुलाकात की, करीब दो घंटे तक पनडुब्बी में रहीं, नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी भीर रहे मौजूद

आईएनएस वाघशीर से समुद्र की गहराई तक पहुंचीं राष्ट्रपति

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने रविवार को भारतीय नौसेना की अग्रिम पंक्ति की युद्धक पनडुब्बी आईएनएस वाघशीर पर सवार होकर समुद्री यात्रा की। ऐसा करने वाली वह देश की पहली महिला राष्ट्रपति बन गई हैं।

राष्ट्रपति और भारतीय सेनाओं की सर्वोच्च कमांडर मुर्मु रविवार को कर्नाटक के कारवार नौसैनिक अड्डे पर पहुंचीं। यहां राष्ट्रपति भारतीय नौसेना की कलवरी श्रेणी (डीजल इलेक्ट्रिक युद्धक पनडुब्बी) की पनडुब्बी 'वाघशीर' पर सवार हुईं। इससे पहले नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी और अन्य अधिकारियों ने राष्ट्रपति का स्वागत किया। नौसेना की वर्दी पहनने के बाद राष्ट्रपति हाथ हिलाकर नौसेनाकर्मियों का अभिवादन करते हुए पनडुब्बी में सवार हुईं। यात्रा के दौरान उन्होंने पनडुब्बी पर तैनात नौसैनाकर्मियों से मुलाकात की। राष्ट्रपति करीब दो घंटे तक पनडुब्बी में रहीं।

पनडुब्बी में गोता लगाना खास अनुभव: यात्रा के बाद विजिटर्स बुक में राष्ट्रपति ने लिखा, 'पनडुब्बी पर सवार नाविकों और अधिकारियों के साथ यात्रा करना, गोता लगाना और समय बिताना बहुत खास अनुभव था।' लिखा कि आईएनएस वाघशीर द्वारा की गई कई सफल फायरिंग और चुनौतीपूर्ण ऑपरेशन इसके आदर्श वाक्य 'वीरता, वर्चस्व, विजय' के अनुसार असाधारण तैयारी और समर्पण को दर्शाते हैं।

युद्धक पनडुब्बी आईएनएस वाघशीर से निकलती राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु।

कलाम ने 2006 में किया था पनडुब्बी का सफर: मुर्मु पनडुब्बी में यात्रा करने वाली पहली महिला राष्ट्रपति और दूसरी राष्ट्रपति हैं। इससे पहले फरवरी 2006 को तत्कालीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने पनडुब्बी में यात्रा की थी। वह ईस्टर्न नेवल कमांड के तहत विशाखापट्टनम से पनडुब्बी में सवार हुए थे।

मिसाल कायम की: मुर्मु अपनी इस यात्रा से दो बार आसमान छूने के बाद समुद्र की गहराइयों तक जाने की नई मिसाल कायम की है। दरअसल, वह दो बार वायुसेना के युद्धक विमानों में उड़ान भरने वाली पहली राष्ट्रपति हैं। उन्होंने 29 अक्तूबर 2025 को अंबाला से राफेल फाइटर जेट में उड़ान भरी थी। सात अप्रैल 2023 में उन्होंने सुखोई-30 एमकेआई में उड़ान भरी थी। वह सुखोई में उड़ान भरने वाली दूसरी महिला राष्ट्रपति हैं।

वाघशीर की क्षमताएं

12 हजार किलोमीटर तक सफर कर सकती है वाघशीर

37 किलोमीटर प्रति घंटा है पानी के भीतर अधिकतम गति

02 सौ 21 फीट लंबी, 40 फीट ऊंची है पनडुब्बी वाघशीर

द्रौपदी मुर्मु पहुंचीं रांची, आज जमशेदपुर जाएंगी

रांची। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु तीन दिवसीय झारखंड दौरे पर रविवार शाम करीब छह बजे रांची पहुंचीं। रांची एयरपोर्ट पर राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने उनका स्वागत किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपति को प्रतीक चिह्न भेंट किया। रांची एयरपोर्ट पर ही उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके बाद काफिला लोकभवन (राजभवन) के लिए रवाना हुआ। वे रात्रि विश्राम रांची में करेंगी। राष्ट्रपति सोमवार को सुबह करीब 9.30 बजे जमशेदपुर के लिए रवाना होंगी। वहां संथाली भाषा की लिपि ओलचिकी के शताब्दी समारोह में शामिल होंगी।

Hindustan Page No-15

जल्द शुरू होने वाले विनिर्माण मिशन को राज्य सफल बनाएं : मोदी

आह्वान

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि देश में जल्द ही राष्ट्रीय विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) मिशन शुरू किया जाएगा। उन्होंने राज्यों से कहा कि वे इसे सफल बनाने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

मोदी ने रविवार को दिल्ली में मुख्य सचिवों के पांचवें राष्ट्रीय सम्मेलन के अंतिम दिन मुख्य सचिवों को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह सम्मेलन सहकारी संघवाद की भावना को मजबूत करने और विकसित भारत के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए केंद्र-राज्य साझेदारी को गहरा करने की दिशा में एक और निर्णायक कदम है।

उन्होंने कहा कि भारत जल्द ही राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन (एनएमएम) शुरू करेगा। प्रत्येक राज्य को इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए और वैश्विक कंपनियों को आकर्षित करने के लिए बुनियादी ढांचा तैयार करना चाहिए। इसमें व्यापार करने में सुगमता, विशेष रूप से भूमि उपयोगिताओं, बुनियादी ढांचे में सुधार आदि शामिल है। उन्होंने राज्यों से विनिर्माण को प्रोत्साहित करने, 'व्यापार करने में सुगमता' को बढ़ावा देने और सेवा क्षेत्र को मजबूत करने का आह्वान किया। कहा कि सेवा क्षेत्र में, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत को वैश्विक सेवा क्षेत्र का महाशक्ति बनाने के लिए स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, परिवहन, पर्यटन, पेशेवर सेवाएं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि जैसे अन्य क्षेत्रों पर अधिक जोर देना चाहिए।

नई दिल्ली में रविवार को मोदी ने रविवार को मुख्य सचिवों के पांचवें राष्ट्रीय सम्मेलन के अंतिम दिन मुख्य सचिवों को संबोधित करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

भारत में विश्व की खाद्य टोकरी बनने की क्षमता: प्रधानमंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत विश्व की खाद्य टोकरी बनने की आकांक्षा रखता है। इसके लिए हमें निर्यात पर ध्यान केंद्रित करते हुए उच्च गुणवत्ता वाली कृषि, डेयरी और मत्स्य पालन की ओर अग्रसर होना चाहिए। प्रधानमंत्री धनधान्य योजना ने कम उत्पादकता वाले 100 जिलों की पहचान की है। इसी प्रकार, सीखने के परिणामों में राज्यों को सबसे कम उत्पादकता वाले 100 जिलों की पहचान करनी चाहिए और कम सूचकांकों से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए काम करना चाहिए।

मानव पूंजी के विकास पर बनाएं समन्वय: सम्मेलन में 'विकसित भारत के लिए मानव पूंजी' के व्यापक विषय पर चर्चा हुई। मोदी ने जोर दिया कि ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य और क्षमताओं से युक्त मानव पूंजी आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति का मूल चालक है। इसे सरकार के समग्र समन्वय दृष्टिकोण के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए।

'सुधारों की एक्सप्रेस' पर सवार हुआ भारत: प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत अपनी युवा आबादी की शक्ति के बल पर "सुधारों की एक्सप्रेस" में सवार हो चुका है। इस जनसांख्यिकी को सशक्त बनाना सरकार की प्रमुख प्राथमिकता बनी हुई है।

वैश्विक प्रतिस्पर्धा का प्रतीक बने 'मेड इन इंडिया': प्रधानमंत्री ने कहा कि विकसित भारत गुणवत्ता और उत्कृष्टता का पर्याय है। शासन, सेवा वितरण और विनिर्माण में गुणवत्ता पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि "मेड इन इंडिया" का लेबल उत्कृष्टता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का प्रतीक बनना चाहिए।

Hindustan Page No-15

महिलाओं पर ही नसबंदी का पूरा भार

भारत सहित दुनिया के तमाम देशों में जनसंख्या-नियंत्रण के लिए नसबंदी को सबसे प्रभावी स्थायी समाधान माना जाता है, लेकिन जब हम देश और प्रदेश में इसके आंकड़ों व सामाजिक स्वीकार्यता को देखते हैं, तो इसमें एक गहरा लैंगिक पक्षपात साफ-साफ दिखाई देता है। यह तथ्य है कि पुरुष नसबंदी अधिक सरल है, फिर भी परिवार नियोजन का पूरा बोझ कमोबेश महिलाओं के कंधों पर डाल दिया जाता है। आखिर क्यों?

अगर हम इसके कारणों में जाते हैं, तो देखते हैं कि कई तबकों में परिवार नियोजन की जिम्मेदारी मुख्य रूप से महिलाओं की मानी जाती है। पुरुषों पर इसके तरीकों को अपनाने का सामाजिक दबाव कम होता है। साथ ही इसके प्रति उनमें जागरूकता और शिक्षा की भी कमी है। कुछ सांस्कृतिक मान्यताओं में पुरुष नसबंदी को मर्दानगी से जोड़कर भी देखा जाता है, जो पुरुषों को इसे अपनाने से रोकता है, जबकि यह महज एक मिथक है। ऐसे में, पुरुषों को परिवार नियोजन में सक्रिय रूप से शामिल होने और अपनी भूमिका को समझने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इसके लिए उनको जागरूक करना होगा। स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को पुरुषों से संवाद कर उनकी भ्रांतियों और चिंताओं को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। पुरुष नसबंदी की कवायद को आकर्षक और सुलभ बनाने की भी जरूरत है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि परिवार नियोजन पति और पत्नी, दोनों की साझा जिम्मेदारी है। इसी से स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। उनको शिक्षित करने का काम सरकारों का है, लेकिन वे इसके प्रति शायद ही गंभीरता दिखाती हैं। वे महिलाओं की नसबंदी को लेकर ही अधिक योजनाएं बनाती हैं, पुरुष नसबंदी को लेकर उनमें संजीदगी नहीं दिखती। यही कारण है कि देश में लगभग 38 फीसदी महिलाएं नसबंदी को अपनाती हैं, जबकि पुरुषों की भागीदारी मात्र 0.3 प्रतिशत है। इसका मतलब है कि नसबंदी कराने वाले हर 100 व्यक्तियों में 99 से अधिक महिलाएं होती हैं। लिहाजा, पुरुषों को नसबंदी के फायदे बताने और उनमें मौजूद गलत धारणाओं को दूर करने के लिए विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए। पुरुष नसबंदी को अधिक आकर्षक बनाने के लिए विशेष परामर्श सेवाएं शुरू की जा सकती हैं। धार्मिक नेताओं और प्रभावशाली व्यक्तियों को शामिल कर पुरुषों को परिवार नियोजन में भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सकता है। जब तक ऐसा नहीं किया जाएगा, तब तक हम कितनी ही प्रगति कर लें, इसकी कोई सार्थकता नहीं है। परिवार नियोजन की जिम्मेदारी महिलाओं पर डालने की सोच हमें बदलनी ही होगी।

मोनिका शर्मा, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

पुरुष नसबंदी

पुरुषों में भी अब बढ़ रही जागरूकता

बहुत साल पहले दूरदर्शन पर पुरुष नसबंदी का एक विज्ञापन आता था- 'न काटा, न चीरा। उसी दिन अस्पताल से छुट्टी। मर्दानगी पर भी कोई असर नहीं। सभी निकट के सरकारी अस्पतालों में यह सेवा निःशुल्क उपलब्ध।' उन दिनों सरकार सभी को एकमुश्त प्रोत्साहन राशि व वेतन-वृद्धि का लाभ भी दे रही थी। तब मैं सोचता था कि जब परिवार नियोजन का इतना विश्वसनीय तरीका उपलब्ध है। प्रोत्साहन राशि और वेतन-वृद्धि भी मिल रही है, तो पुरुष इसका फायदा क्यों नहीं उठाते हैं? थोड़ा अध्ययन करने पर मुझे कुछ कारण समझ में आए। पहला, पुरुषों, विशेषकर ग्रामीण और कम शिक्षित लोगों में भय था कि इससे उनकी मर्दानगी प्रभावित होगी। दूसरा, बाल मृत्यु दर अधिक थी, तो पुरुषों, यहां तक कि महिलाओं को भी लगता था कि ऐसा न हो, नसबंदी के बाद बच्चे की मौत हो जाए और हम निःसंतान ही रह जाएं। तीसरा, नसबंदी करने वाले डॉक्टरों की विश्वसनीयता बहुत अधिक नहीं थी। तमाम तरह के मामले अखबारों/टीवी में उछला करते थे, जिनमें नसबंदी के दौरान या बाद में पुरुषों को कई समस्याएं होने का जिक्र होता। चौथा, एक विशेष मजहब के लोग नसबंदी कराना अपनी मान्यताओं के विरुद्ध मानते थे। और पांचवां, पुरुषों को लगता था कि बच्चे पैदा करना महिलाओं का काम है, तो नसबंदी भी उनकी ही जिम्मेदारी होनी चाहिए।

मगर जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर सुधरता गया, चिकित्सा सुविधाएं बढ़ती गईं, लोगों का चिकित्सकों पर विश्वास बढ़ता गया, नसबंदी ऑपरेशन तरह का टैबू नहीं रह गया। जागरूकता अभियान और सरकारी प्रोत्साहन योजनाओं का भी इसमें विशेष योगदान रहा। विश्व स्तर पर देखें, तो पुरुष नसबंदी का आंकड़ा 10-15 प्रतिशत तक है, खासकर अमेरिका (15 फीसदी) और चीन में। पिछले दशक में वैश्विक स्तर पर इसमें कोई गिरावट नहीं आई है, बल्कि जागरूकता में वृद्धि ही हुई है। भारत में भी धीरे-धीरे ही सही, लेकिन पुरुषों में नसबंदी के प्रति भय खत्म होता जा रहा है।

आंकड़ों की बात करें, तो तेलंगाना (जैसे- करीमनगर, वारंगल), तमिलनाडु (थेनी) जैसे कुछ सूबों में जागरूकता, प्रभावी परामर्श और वित्तीय प्रोत्साहन के कारण पुरुष नसबंदी में वृद्धि हुई है। सातवें वेतन आयोग की रिपोर्ट में सरकार ने माना है कि अब लोग परिवार नियोजन के प्रति इतने जागरूक हो चुके हैं कि उन्हें अलग से वेतन-वृद्धि देने की जरूरत नहीं है। इन सबको देखकर यह कहना अनुचित है कि परिवार नियोजन का सारा भार महिलाओं पर है और पुरुष उदासीन हैं। पुरुषों में भी तेजी से रुझान बढ़ रहा है और उम्मीद है कि भविष्य में इसमें और तेजी आएगी।

विनय सिंह बैस, टिप्पणीकार

बेटियों का बोलबाला बढ़ाने वाला साल

यहां स्कैन करें

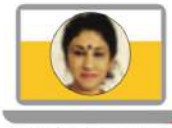

अनिता भटनागर जैन | पूर्व आईएएस

सिंहावलोकन- 2025

तमाम चुनौतियों के बावजूद शासन-प्रशासन से खेल व युद्ध के मैदान तक बेटियों ने यह बता दिया कि अवसर मिले, तो वह कोई भी जिम्मेदारी निभाने को पूरी तरह तैयार हैं।

अम्मा, शहर तक जा रहा हूं। कुछ लाना है?

दादी बोलीं- हां, ज्योति बिटिया के लिए क्रिकेट का सेट लेते आना।

क्या?- पिताजी अवाक् रह गए।

दादी ने कहा- हां। भारत की बेटियों ने वनडे विश्व कप जीतकर देश का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। अपनी ज्योति बिटिया को भी क्रिकेट का बहुत शौक है। क्या पता, कल वह भी अपने देश के लिए खेले!

समाज बदल रहा है, देश बदल रहा है। अभी कुछ ही साल पहले तक महिला क्रिकेट टीम की जीत की खबर को भी पुरुष टीम की हार की तुलना में अहमियत नहीं मिलती थी। आज समाचारपत्र, टीवी चैनल, होर्डिंग, सब पर हमारी 'गर्ल्स इन ब्लू' छाई हुई हैं। आईसीसी विश्व कप जीतने वाली ये नायिकाएं देश के विभिन्न ग्रामीण व शहरी इलाकों से आती हैं। इनमें से कई महिला खिलाड़ी कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवार से आती हैं। इसलिए, यह ऐतिहासिक विजय केवल इन महिला क्रिकेटरों की ही जीत नहीं है, बल्कि हमारे देश में महिला सशक्तीकरण का बड़ा प्रेरणास्रोत भी है। इसी तरह, दृष्टिबाधित बेटियों ने टी-20 विश्व कप जीतकर भारतीय लड़कियों का हौसला बढ़ाया, तो महिला कबड्डी टीम ने दूसरी बार विश्व कप जीतकर कीर्तिमान रच दिया। ऐसा ही कमाल विश्व मुक्केबाजी कप के फाइनल में भारत की बेटियों ने किया। उन्होंने नौ स्वर्ण पदक समेत कुल 20 मेडल अपने नाम किए।

पुलिस कांस्टेबल सारिका यादव ने तो राष्ट्रीय पुलिस वेट लिफ्टिंग प्रतियोगिता में गर्भावस्था के सातवें महीने में 145 किलो वजन उठाकर न केवल पदक जीता, वरन महिला शक्ति का एक नया सोपान रचा। महिला शतरंज वर्ल्ड कप की विजेता और उप-विजेता, दोनों भारतीय बनीं। ये उस पीढ़ी की खिलाड़ी हैं, जिसमें लड़के और लड़कियों की अकादमी एक ही है।

जाहिर है, साल 2025 अब समाप्त हो रहा है, तो यही उपयुक्त समय है, महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वार्षिक प्रगति के आकलन और भविष्य की रणनीति तय करने का। विश्व और देश के विकास में आधी आबादी की स्थिति अति-महत्वपूर्ण विषय है। इसलिए, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखें, तो अनेक देशों में इस वर्ष महिला नेतृत्व देखने को मिला। जैसे, जापान में साने ताकाची को इस साल प्रधानमंत्री चुना गया। वह अपने देश की प्रधानमंत्री बनने वाली पहली महिला हैं। नामीबिया ने भी एक महिला को इस साल अपना शासनाध्यक्ष चुना।

भारत में आरपीएफ में सोनाली मिश्रा प्रथम महिला महानिदेशक नियुक्त हुईं। भारतीय नौसेना की 'फाइटर स्ट्रीम' में शामिल होने वाली सब-लेफ्टिनेंट आस्था पूनिया भी ऐसी पहली महिला हैं। पाकिस्तान के विरुद्ध 'ऑपरेशन सिंदूर' के समय हमारी महिला सैन्य अधिकारियों ने भी ऐतिहासिक प्रतीकात्मक भूमिका निभाई। कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह पूरे देश को इस ऑपरेशन की जानकारी देती रहीं। महाराष्ट्र में सुजाता सौनिक, तो ओडिशा में अनु गर्ग पहली महिला मुख्य सचिव नियुक्त हुईं।

ये सभी बातें इस बात की परिचायक हैं कि समाज में लोगों की सोच में परिवर्तन आ रहा है, फिर भी महिला सशक्तीकरण की डगर अभी लंबी है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्व में 240 करोड़ महिलाओं के पास समान अधिकार नहीं हैं। अनुमान है कि इस खाई को पाटने में कम से कम 50 वर्ष लगेंगे। भारत में एक सर्वेक्षण के अनुसार, 37 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि उन्हें पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है। यूनिसेफ के अनुसार, भारत में 33 प्रतिशत बाल विवाह होते हैं और यह प्रमुखतः उत्तर के पांच राज्यों में हैं। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यद्यपि सुधार हुआ है, पर अभी भी 15 से 49 साल वाली 57 प्रतिशत और गर्भधारण करने वाली 52 प्रतिशत महिलाओं में एनीमिया, यानी खून की कमी पाई गई है।

देश की हर राजनीतिक पार्टी महिला सशक्तीकरण की बात करती है, क्योंकि महिलाओं के वोट अब जीत और हार में निर्णायक सिद्ध हो रहे हैं। हालांकि, जब चुनाव में टिकट देने की बात आती है, तब पुरुष प्रधान समाज की सोच पार्टियों पर हावी हो जाती है। इस साल भी किसी राजनीतिक पार्टी ने महिलाओं को उचित संख्या में उम्मीदवार बनाने का हौसला नहीं दिखाया। साल की शुरुआत में दिल्ली और नवंबर में हुए बिहार विधानसभा के चुनाव इसके स्पष्ट उदाहरण हैं।

लैंगिक भेदभाव के शर्मनाक उदाहरण इस साल भी दिखे। एक प्रख्यात फिल्म अभिनेता ने टिप्पणी की कि वह अपने पोते के जन्म की प्रतीक्षा कर रहे हैं, ताकि उनकी विरासत चल सके। एक महिला जन-प्रतिनिधि ने कहा कि परंपराओं का पालन न करने वाली बेटियों की टांगें तोड़ दी जानी चाहिए, वहीं एक महिला मुख्यमंत्री ने बलात्कार-प्रकरण में कहा कि पीड़ित डॉक्टर को देर रात तक बाहर नहीं रहना चाहिए था। यदि इतने जिम्मेदार व उच्च पदस्थ लोग ऐसा कहेंगे, तो कल्पना कीजिए कि आम समाज में इस भेदभाव की जड़ें कितनी गहरी होंगी? केरल फिल्म उद्योग में यौन उत्पीड़न की जांच के लिए गठित हेमा समिति की रिपोर्ट पर दाखिल सभी 35 केस ड्रॉप कर दिए गए, क्योंकि कोई भी पीड़ित महिला गवाही देने को तैयार नहीं हुई।

टेक्नोलॉजी के इस दौर में, जब जीवन के अनेक पहलुओं में बेहतरी हुई है, तब महिलाओं के ऑनलाइन उत्पीड़न में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इंटरनेट का उपयोग हथियार के रूप में हो रहा है। इस साल एक नई समस्या 'मेनोस्फीयर' के रूप में सामने आई है। यह पुरुषों से संबंधित समस्याओं का एक ऑनलाइन मंच है, जो स्त्री-द्वेष और नारीवाद के विरोध को बढ़ावा दे रहा है।

महिला सशक्तीकरण का मुद्दा अत्यंत जटिल है। सरकार की अनगिनत योजनाएं हैं, परंतु वास्तविक बदलाव तभी संभव है, जब समाज-परिवार वास्तव में अपनी सोच बदले और उस सोच को अपने आचरण में कार्यान्वित करे। जब तक शासन-प्रशासन और राजनीतिक निर्णय करने वालों की पुरुष प्रधान सोच, कार्य या गतिविधि में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक महिला सशक्तीकरण के लक्ष्य को पाना आसान नहीं है। उन्हें बराबरी के स्तर पर आने में दशकों लग जाएंगे।

आज भारत की बेटियां विश्व में अधिकतम संख्या में पायलट बनकर आसमान की ऊंचाइयां छू रही हैं, लेकिन जमीन पर कई बेटियों को निर्णय की स्वतंत्रता दिलाने के लिए हमें संघर्ष जारी रखना होगा।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

Hindustan Page No-10

भारतीय वैज्ञानिकों के कमाल ने पूरी दुनिया को चौंकाया

यहां स्कैन करें

मनीष मोहन गोरे | वैज्ञानिक पत्रकार

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत ने इस साल खूब प्रगति की है, जिससे एक 'ग्लोबल इनोवेशन लीडर' के रूप में उसकी स्थिति काफी मजबूत हुई है। अंतरिक्ष अनुसंधान, स्वदेशी सेमीकंडक्टर, क्वांटम कंप्यूटिंग, टिकाऊ इंफ्रास्ट्रक्चर व बड़े रिसर्च इको-सिस्टम में हमारे वैज्ञानिकों, संस्थानों, स्टार्टअप व नीति-निर्माताओं ने बड़े अनुसंधान किए व उपलब्धियां दर्ज कीं।

साल 2025 में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों में सबसे आगे रही। इसरो ने इस साल 200 से भी ज्यादा महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं, जो इसकी लॉन्च क्षमता, ऑर्बिटल साइंस और मिशन-सामर्थ्य की तेज प्रगति को दर्शाती हैं। इस साल की इसकी खास सफलताओं में से एक है, भारत का पहला सफल स्पेस डॉकिंग एक्सपेरिमेंट (स्पाडेक्स), जिसमें दो सैटेलाइट को सफलतापूर्वक डॉक किया गया। इस जटिल ऑपरेशन ने भारत को 'इन-स्पेस डॉकिंग' में विश्व का चौथा सक्षम देश बना दिया है। यह टेक्नोलॉजी भविष्य के स्पेस स्टेशन, सैटेलाइट सर्विसिंग और लंबे समय तक मानव अंतरिक्ष यात्रा के लिए बहुत आवश्यक है।

भारत का महत्वाकांक्षी मानव अंतरिक्ष मिशन 'गगनयान' पर तेजी से काम जारी है। इसके लिए चार गगन यात्रियों (प्रशांत नायर, अजीत कृष्णन, शुभांशु शुक्ला और अंगद प्रताप) का चयन किया गया। इनमें से एक शुभांशु शुक्ला एक्सिओम-4 मिशन के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर गए और 26 जून से 14 जुलाई तक वहां रहकर उन्होंने आईएसए ऑर्बिटिंग लैब में रहने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री होने का कीर्तिमान बनाया। इस वर्ष इसरो ने आदित्य-एल1 सोलर मिशन से 'टेराबाइट्स साइंटिफिक डाटा' भी जारी किया, जिससे दुनिया भर के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को सोलर फिजिक्स और स्पेस वेदर की घटनाओं के बारे में हमारी समझ को गहरा करने में मदद मिली।

यह क्वांटम महत्वाकांक्षा का भी साल रहा। नेशनल क्वांटम मिशन के तहत बेंगलुरु स्थित डीप-टेक कंपनी क्यूपीआईएआई ने क्यूपीआईएआई-इंडस लॉन्च किया, जो देश का पहला फुल-स्टैक क्वांटम कंप्यूटर है। इसके साथ ही नेशनल सुपरकंप्यूटिंग मिशन ने भारत के हाई-परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग क्षेत्र को नया विस्तार दिया, जिससे रिसर्च संस्थानों में पेटाफ्लॉप्स प्रोसेसिंग पावर की तैनाती हो सकी। ये सिस्टम जलवायु मॉडलिंग, दवाओं की खोज, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को नई गति दे रहे हैं।

इस साल अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) में रहने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री होने का कीर्तिमान शुभांशु शुक्ला के नाम दर्ज हुआ।

कोर कंप्यूटिंग हार्डवेयर में आत्मनिर्भरता ने 2025 में एक बड़ी छलांग लगाई। इसरो व चंडीगढ़ स्थित सेमीकंडक्टर लेबोरेटरी ने विक्रम 3201 माइक्रोप्रोसेसर विकसित किया। यह भारत की पहली पूर्ण स्वदेशी 32-बिट स्पेस-ग्रेड चिप है, जिसे मिशन-क्रिटिकल एप्लीकेशन के लिए तैयार किया गया है। केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान ने पर्यावरण के अनुकूल इंफ्रास्ट्रक्चर में स्टील स्लैग टेक्नोलॉजी का प्रयोग कर औद्योगिक 'बाइप्रोडक्ट' को कम उत्सर्जन वाले हाईवे सामग्री में तब्दील किया।

सरकार ने रणनीतिक रूप से वित्तीय-पोषण और नीतिगत पहल के जरिये विज्ञान के क्षेत्र में शोध को बढ़ावा देना जारी रखा। शोध में आने वाली रुकावटों को कम करने और सभी क्षेत्रों में इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए इस वर्ष एक लाख करोड़ रुपये की रिसर्च, डेवलपमेंट और इनोवेशन योजना लॉन्च की गई। भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान उत्सव और राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार 2025 ने सभी क्षेत्रों में वैज्ञानिक उत्कृष्टता को उजागर किया। इससे ऐसी संस्कृति को बढ़ावा मिला, जो जिज्ञासा और खोज को महत्व देती है।

साल 2025 में भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपलब्धियां एक सुसंगत लक्ष्य का हिस्सा हैं, जो मौलिक शोध, स्वदेशी तकनीकी विकास, क्षमता निर्माण और समावेशी विकास को दर्शाती हैं। इस साल भारत ने दिखाया कि वैज्ञानिक उत्कृष्टता और सामाजिक प्रगति साथ-साथ आगे बढ़ सकती हैं। जैसे-जैसे देश भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार हो रहा है- स्वच्छ ऊर्जा, स्वास्थ्य-नवाचार, जलवायु लचीलापन और अंतरिक्ष में मानव अन्वेषण- इस साल की उपलब्धियां परिवर्तनकारी दशक की नींव रखती प्रतीत हो रही हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

सर्दी का सितम : छह जिलों में शीत दिवस, आठ जिलों का न्यूनतम पारा 10 के नीचे

बिहार घने कोहरे में लिपटा

पटना/नई दिल्ली, हिटी/ एजेंसी। साल खत्म होने से पहले सर्दी का सितम और बढ़ गया है। बिहार समेत उत्तर भारत के ज्यादातर राज्य कड़ाके की सर्दी झेल रहे हैं, जबकि पंजाब से लेकर (बिहार होते हुए) असम तक सभी राज्य घने कोहरे की चपेट में आ गए हैं। सेटेलाइट तस्वीर में यह संपूर्ण इलाका कोहरे की चादर में लिपटा दिख रहा है।

रविवार को बिहार सर्द पछुआ से भी ठिठुरता रहा। मौसम विभाग ने सोमवार को भी उत्तर बिहार में घने कोहरे छाए रहने को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। वहीं दक्षिण बिहार में भी हल्के से मध्यम स्तर के कोहरे छाए रहने के आसार हैं।

रविवार को जहानाबाद भीषण शीत दिवस और फारबिसगंज, गया जी, बक्सर, औरंगाबाद और अरवल शीत दिवस की चपेट में रहा। वहीं, गया जी, छपरा, फारबिसगंज, बक्सर, औरंगाबाद, राजगीर, अरवल और जहानाबाद का न्यूनतम तापमान 10 डिग्री के नीचे दर्ज किया गया। राज्य के इन जिलों में शीतलहर जैसे हालात बने रहे। गया जी में घना कोहरा छाया रहा है। इससे दृश्यता मात्र 50 मीटर दर्ज की गई। मौसम विभाग ने अगले तीन दिनों के दौरान राज्य के अधिकतम और न्यूनतम तापमान में 1 से 2 डिग्री सेल्सियस की क्रमिक वृद्धि होने की संभावना जतायी है। रविवार को राज्य के ज्यादातर शहरों के न्यूनतम तापमान में गिरावट और अधिकतम में बढ़ोतरी हुई। प्रदेश का न्यूनतम तापमान 6.8 से 13.4 और अधिकतम तापमान 13.2 से 18.7 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। सबसे कम तापमान 6.8 डिग्री राजगीर और सबसे अधिक 18.7 डिग्री शेखपुरा में दर्ज किया गया।

झारखंड के सात जिलों में शीत लहर: झारखंड में रांची के पास कांके 2.5 डिग्री सेल्सियस के साथ राज्य का सबसे ठंडा स्थान रहा। मौसम विभाग ने लातेहार, लोहरदगा, गुमला, खूंटी, रांची, रामगढ़ और बोकारो के लिए शीत लहर की स्थिति के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। दूसरी ओर, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में रविवार को भी कड़ाके की ठंड जारी रही। देखें P 02

पंजाब से लेकर बिहार होते हुए उत्तर पूर्व तक कोहरे की चादर

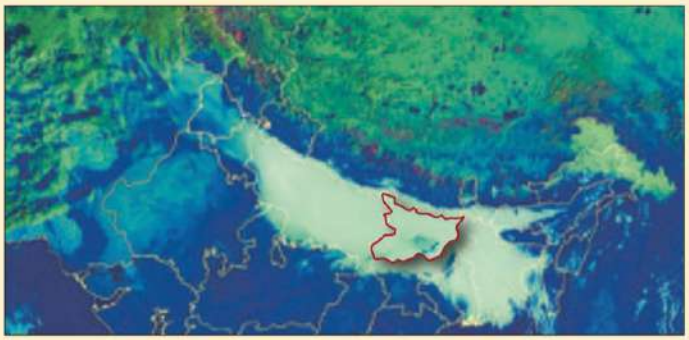

उपग्रह से प्राप्त चित्र में उत्तर भारत के राज्यों पर कोहरे की मोटी चादर दिख रही है। बिहार लाल घेरे में ।

6.8 डिग्री तापमान के साथ राजगीर सूबे में सबसे ठंडा

- आज भी उत्तर बिहार में घने कोहरे का मौसम विभाग ने जारी किया ऑरेंज अलर्ट

पटना का न्यूनतम तापमान गिरा

पटना में सोमवार को कोहरे के साथ बादल भी छाया रहेगा। पटना में लगातार आठवें दिन रविवार को धूप नहीं निकली, जिससे दिन में भी लोगों को कंपकंपी का एहसास हुआ। मौसम विभाग के अनुसार दिन में धूप निकलती है, लेकिन बादल छाए रहने के कारण असर नहीं दिखता है। रविवार को राजधानी के न्यूनतम तापमान में 1.2 डिग्री की गिरावट और अधिकतम तापमान में 1.2 डिग्री की बढ़ोतरी हुई। अधिकतम तापमान 16 डिग्री और न्यूनतम तापमान 10.9 डिग्री दर्ज किया गया।

Hindustan Page No-4

24 उद्योगों में ₹2255 करोड़ का निवेश होगा

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन पैकेज लागू होने के बाद देश-दुनिया के निवेशक बिहार के प्रति तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। बीते कुछ महीनों में राज्य सरकार को निवेश के 143 निवेश प्रस्ताव मिले। इसके माध्यम से 27 हजार करोड़ का निवेश होना है। इन प्रस्तावों में 65 प्रस्तावों को लेकर एमओयू भी हो चुका है। इनमें 15 हजार करोड़ से अधिक का निवेश होगा। पिछले तीन महीनों में राज्य में निवेश के 2255 करोड़ के 24 प्रस्तावों का एमओयू किया गया है।

राज्य सरकार ने उद्योग को रफ्तार देने के लिए जिन योजनाओं पर काम शुरू किया है, उसका परिणाम अब स्पष्ट रूप से जमीन पर दिखने लगा है। पिछले दिनों राज्य में इथेनॉल, सीमेंट, टेक्सटाइल, बैग, जूता-चप्पल, सॉफ्ट ड्रिंक, पेपर, रिसाइकिल पेपर, रबड़, प्लास्टिक, वाटर सप्लाई सामग्री, नमकीन-मिक्सचर, फ्लावर मिल्स, राइस मिल्स, सरिया, गुड़ की फैक्ट्रियां लगी हैं। इसके अलावा खाद्य प्रसंस्करण, इंजीनियरिंग, ऊर्जा, टेक्सटाइल, आईटी, आईटीईएस, लघु विनिर्माण, पर्यटन एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में तेजी से निवेश आ रहा है।

बिहार के उत्पाद दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, यूपी, मध्यप्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना तक जा रहे हैं। कुछ उत्पाद यूरोपीय देशों के अलावा, अमेरिका, नेपाल भी पहुंच रहे हैं। अब बिहार यूरोपीय संघ के विभिन्न देशों में निर्यात बढ़ाने की योजना पर काम कर रहा है।

- निवेश प्रोत्साहन नीति के बाद से अब तक 27 हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव आए
- इथेनॉल, सीमेंट, कपड़ा, राइस मिल क्षेत्र में 15 हजार करोड़ के प्रस्तावों पर हुआ एमओयू

रोजगार-नौकरियां पैदा करने वाले उद्योगों को 10 एकड़ भूमि मुफ्त

राज्य में 100 करोड़ निवेश पर एक हजार प्रत्यक्ष रोजगार नौकरियां पैदा करने वाले उद्योगों को 10 एकड़ भूमि मुफ्त में या फिर एक रुपए प्रति एकड़ के टोकन राशि पर दी जाएगी। इसके अलावा 40 करोड़ तक की ब्याज सहायता दी जाएगी। यह मध्यम और लघु उद्यमों के लिए विशेष रूप से लाभदायक है। इसके साथ ही पूंजी सब्सिडी, बिजली शुल्क में छूट, कौशल विकास के लिए सहायता और पर्यावरण अनुकूल परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त प्रोत्साहन की व्यवस्था की गयी है। उद्यमियों को विशेष वित्तीय सहायता का भी प्रावधान है। जिसमें कर्मचारियों को 5 हजार प्रति माह प्रोत्साहन, 300 फीसदी ईएसआई, ईपीएफ समर्थन और 20 हजार प्रति कर्मचारी कौशल विकास अनुदान देने का प्रावधान है।

Hindustan Page No-1

इलेक्ट्रिक कृषि ट्रैक्टर के लिए पहला भारतीय मानक जारी

- नए मानकों के तहत होगा इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर का परीक्षण
- अभी अपने-अपने दावे करती हैं ट्रैक्टर निर्माता कंपनियां

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: खेती को सस्ता, आसान और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की दिशा में केंद्र सरकार ने एक बड़ा और अहम कदम उठाया है। देश में पहली बार इलेक्ट्रिक कृषि ट्रैक्टरों के लिए भारतीय मानक जारी किया गया है। अब तक इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों की ताकत, क्षमता और सुरक्षा को परखने के लिए कोई तय और भरोसेमंद व्यवस्था नहीं थी। कंपनियां अपने-अपने दावे करती थीं, जिससे किसानों के मन में शंका बनी रहती थी। नए मानक के लागू होने से किसानों को स्पष्ट जानकारी मिल सकेगी कि वे जो इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर खरीद रहे हैं, वह खेत में कितने काम का है और कितना सुरक्षित है।

उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रल्हाद जोशी ने आइएस 19262:2025 'इलेक्ट्रिक कृषि ट्रैक्टर - परीक्षण संहिता' का विमोचन किया, जिसे भारतीय मानक ब्यूरो (बीआइएस) ने तैयार किया है। इसके तहत इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों की शक्ति, कार्यक्षमता और सुरक्षा का परीक्षण तय प्रक्रिया से होगा। सभी कंपनियों के ट्रैक्टर को एक ही कसौटी पर परखा जा सकेगा। नए मानक में पहली बार स्पष्ट किया गया है कि इलेक्ट्रिक कृषि ट्रैक्टर की शक्ति, और कार्यक्षमता को कैसे मापा जाएगा। इसमें पीटीओ पावर यानी ट्रैक्टर से चलने वाले औजारों की ताकत, ट्राली या हल खींचने की क्षमता और बेल्ट-पुली से जुड़े कार्यों के प्रदर्शन की जांच का पूरा तरीका तय किया गया है। इससे किसानों को पता चल सकेगा कि ट्रैक्टर जुताई, बुआई, ढुलाई या अन्य कामों में कितना सक्षम है।

मानकों में सुरक्षा और विश्वसनीयता पर भी जोर दिया गया है। ट्रैक्टर के पुर्जे सही हैं या नहीं, बैटरी, मोटर और अन्य हिस्से सुरक्षित ढंग से काम कर रहे हैं या नहीं, इन सबकी जांच तय नियमों के तहत होगी। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे का कहना है कि इस पहल से इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को तेजी से अपनाया जाएगा। कंपनियां भी बेहतर, सुरक्षित और भरोसेमंद मशीनें बनाने के लिए आगे आएंगी।

किसानों की ईंधन लागत घटेगी, रखरखाव भी आसान

किसानों के लिए इलेक्ट्रिक कृषि ट्रैक्टर कई मायनों में डीजल ट्रैक्टरों से बेहतर साबित हो सकते हैं। सबसे बड़ा फायदा ईंधन खर्च में कमी का है। डीजल की कीमतें लगातार बढ़ने से खेती की लागत बढ़ती जा रही है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर बिजली से चलते हैं, जिसकी लागत डीजल की तुलना में काफी कम होती है। अगर किसान सोलर पैनल या गांव की सस्ती बिजली का उपयोग करें तो खर्च और भी घट सकता है। इससे खेती की कुल लागत कम होगी और किसानों की बचत बढ़ेगी। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों से शोर कम होता है और धुआं नहीं

निकलता। रखरखाव भी आसान है। डीजल इंजन की तुलना में पुर्जे कम होते हैं। इसलिए खराबी की संभावना कम रहती है और मरम्मत पर खर्च भी घटता है। इससे किसानों को लंबे समय में आर्थिक फायदा होता है।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

Dainik Jagaran Page No-10

छत्तीसगढ़ डायरी

प्रगतिशील युवाओं पर सरकार की नजर

ब्र. सुनील गुप्ता
संपादकीय प्रभारी, बिलासपुर

हाल के दिनों में राज्य सरकार ने प्रदेशभर में युवा महोत्सव का आयोजन किया था। नाम से ही यह स्पष्ट हो रहा है कि सरकार की नजरें छत्तीसगढ़ के भविष्य तय करने वाले युवाओं पर टिकी हुई हैं। नौकरी के साथ ही स्वयं के रोजगार के जरिए युवाओं को अपने पैरों पर खड़ा करने की दिशा में महोत्सव को बड़ा और सशक्त कदम माना जा रहा है। छत्तीसगढ़ के अमूमन सभी जिला मुख्यालयों में महोत्सव का आयोजन किया गया। आयोजन के पीछे सरकार की पूरी कोशिश युवाओं की एकजुटता और उसको मौजूदगी रही। महोत्सव के साथ ही प्रदेशभर में संस्कृत खेल महोत्सव का आयोजन किया गया। राज्यभर में आयोजित होने वाले दो महोत्सव का राजनीतिक नजरिए को छोड़ भी दें तो सरकार का पूरा फोकस युवाओं की बेहतरी और उन्नति पर ही रहा है। खेल के जरिए ग्रामीण व शहरी युवा प्रतिभाओं को उभारना, उनको मंच देना और खेल प्रतिभाओं को आगे चलकर तराशना ही मुख्य उद्देश्य रहा है।

बिलासपुर में खेल अकादमी का गठन किया गया है। राष्ट्रीय खेल को बढ़ावा देने के नजरिए से एस्ट्रोटर्फ भी बिछाया गया है। अकादमी के जरिए खेल प्रतिभाओं को उभारना और राष्ट्रीय स्तर पर मंच देना ध्येय रहा है। खेल प्रतिभाओं के साथ ही व्यापार-व्यवसाय की दिशा में कदम बढ़ाने वाले युवाओं को केंद्र व राज्य शासन की महत्वपूर्ण योजनाओं के जरिए उस मुकाम तक पहुंचाना है, जिसके लिए उन्होंने अपना उद्देश्य निर्धारित किया है।

प्रदेश में प्रतिभावान एवं क्षमतावान युवाओं की कमी नहीं है। जरूरत इस बात की है कि उनकी प्रतिभा और

बिलासपुर में आयोजित युवा महोत्सव में राज्यपाल रमेन डेका। (बाएं)। फाइल

क्षमता का बेहतर उपयोग हो। या ऐसा भी कह सकते हैं कि प्रतिभा व क्षमता का सदुपयोग हो। प्रतिभा संपन्न युवाओं को उनकी प्रतिभा व क्षमता के अनुरूप मंच मिले तो इसमें कोई दो राय नहीं कि सफलता के कदम न चूमे।

राज्य सरकार के नीति निर्धारकों को भी इस बात का अच्छी तरह खयाल है। युवा महोत्सव और संसद खेल महोत्सव के आयोजन के पीछे का उद्देश्य भी पूरी तरह से स्पष्ट है। सरकार युवा प्रतिभा को निखारने की शुरुआत कर चुकी है। राज्य सरकार की कोशिशों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वह दिन दूर नहीं है, जब छत्तीसगढ़ में युवा प्रतिभा अपने मेहनत के दम पर इतिहास रचते दिखाई देगी।

खेलो इंडिया : इसे विडंबना ही कहेंगे कि छत्तीसगढ़ की राष्ट्रीय स्तर पर माओवाद पीड़ित राज्य के रूप में छवि बनी थी। प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध राज्य के लिए यह किसी काले धब्बे से कम नहीं था। बस्तर के लोग इस पीड़ा को दशकों से सहते आए हैं। बस्तर अब पहले जैसा नहीं रहा। बस्तर में शांति और समृद्धि रचने बसने लगी है। शांति का सूरज चमकने लग है, ऐसा कहें तो अचरज की बात नहीं होनी चाहिए। माओवादियों से बस्तर अब मुक्त होने की ओर अग्रसर है। सुदूर वनांचल में रहने वाले ग्रामीण अब दिन में कड़ी मेहनत कर रहे हैं और रात में चैन की नींद सो रहे हैं। बस्तर अब पहले जैसा नहीं रहा। बस्तर से माओवादियों के पैर उखड़ते ही राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ की छवि भी उसी अंदाज में तेजी के साथ बदलने लगी है। माओवाद अब इतिहास के पन्नों से गायब हो गया है।

नए सवेरे और नए उत्साह के साथ बस्तरवासी नई कहानी गढ़ने लगे हैं। ये भी उत्साह जगाने वाला रहा, बस्तर में ओलिंपिक का आयोजन हुआ। कभी नक्सलगढ़ के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्रों से खेल प्रतिभाओं ने अपनी प्रतिभा का ऐसा प्रदर्शन किया कि खेल समीक्षकों से लेकर प्रशिक्षक भी हैरान रह गए हैं। ये प्रतिभाएं माओवादी गतिविधियों के बीच दम तोड़ रही थीं। अब ऐसा नहीं है। प्रतिभाओं को अपनी पूरी क्षमता के साथ प्रदर्शन का अवसर मिल रहा है। मैदान मिल रहा है। एक खुला और संभावनाओं से भरा मैदान। जहां केवल और केवल उनकी प्रतिभाओं को निखारने और एक बड़ा मंच देने की सरकार की योजना है।

बस्तर की बेटी ने प्रदेश का नाम किया रोशन : छत्तीसगढ़ के माओवाद प्रभावित कोंडागांव जिले की 14 वर्षीय जुडो खिलाड़ी योगिता मंडावी, जो कम उम्र में ही अनाथ हो गई थीं, राष्ट्रीय स्तर की खेली इंडिया खिलाड़ी के रूप में अपनी पहचान बनाई है। इन्होंने कई पदक जीते हैं, जिनमें असमिता खेली इंडिया महिला जुडो लीग (2025) में सब-जूनियर 44 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक और राज्य स्तरीय स्कूल गेम्स (2024-25) में अंडर-19 गर्ल्स खिताब शामिल हैं।

इसके अलावा, इन्होंने कई अन्य प्रतियोगिताओं में भी शीर्ष स्थान प्राप्त किए हैं। एसजीएफआइ नेशनल और खेलो इंडिया लीग जैसे प्रमुख राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने के बाद, वह भारतीय जुडो की सबसे प्रेरणादायक युवा प्रतिभाओं में से एक के रूप में उभरी हैं। खेल के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्टता के लिए योगिता मंडावी को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। बस्तर की इस प्रतिभावान बेटी ने छत्तीसगढ़ का मान तो बढ़ाया ही है, साथ ही गौरव की अनुभूति भी कराई है।

Dainik Jagaran Page No-9

12:17 PM Mon 29 Dec

अरावली विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का स्वत : संज्ञान, सुनवाई आज

नई दिल्ली, प्रेट्र: अरावली रेंज की परिभाषा को लेकर पर्यावरणविदों और विपक्षी दलों की चिंता, गहराते विवाद, आंदोलन और बढ़ती आलोचना के बीच सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले पर स्वतः संज्ञान लेते हुए फिर से सुनवाई करने का फैसला किया है। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआइ) न्यायमूर्ति सूर्यकांत की अध्यक्षता में तीन जजों की पीठ सोमवार को इस मामले पर सुनवाई करेगी। सीजेआइ के अलावा इस पीठ में न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी और आगस्टीन जार्ज भी हो सकते हैं।

विवाद की जड़ केंद्र द्वारा अरावली पर्वतमाला की वह नई परिभाषा है, जो 100 मीटर ऊंचाई के मानदंड पर आधारित है। पर्यावरणविदों का कहना है कि इस एकरूप मानदंड के कारण हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में फैली प्राचीन अरावली श्रृंखला के लगभग 90 प्रतिशत हिस्से को 'अरावली' की श्रेणी से बाहर किया जा सकता है, जिससे वहां खनन गतिविधियों का रास्ता साफ हो जाएगा।

इससे पहले 20 नवंबर को सुप्रीम कोर्ट ने अरावली पर्वतमाला की एक समान और वैज्ञानिक परिभाषा को स्वीकार करते हुए दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में इसके दायरे में आने वाले क्षेत्रों में नई खनन लीज देने पर रोक लगा दी थी। यह रोक तब तक लागू रहेगी, जब तक विशेषज्ञों की रिपोर्ट सामने नहीं आ जाती।

पर्यावरणविदों की चिंता, अरावली में बढ़ेगा खनन : समाचार एजेंसी एएनआइ के मुताबिक, अरावली विरासत जन अभियान से जुड़ी पर्यावरणविद नीलम अहलूवालिया ने इस परिभाषा को "पूरी तरह अस्वीकार्य" करार देते हुए सुप्रीम कोर्ट से 20 नवंबर के अपने आदेश को वापस लेने और केंद्र से नई परिभाषा को रद करने की मांग की है।

अरावली की ऊंचाई आधारित परिभाषा पर पर्यावरणविदों को आपत्ति पेज»3

- सीजेआइ की अध्यक्षता में तीन जजों की पीठ 20 नवंबर के सुप्रीम कोर्ट के फैसले की करेगी समीक्षा

अरावली परिभाषा विवाद

- खनन के संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट ने विशेषज्ञ समिति की परिभाषा को किया था स्वीकार
- स्थानीय भू-स्तर से 100 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्र को माना था अरावली पहाड़ियां
- एफएसआइ का सुझाव था कि तीन डिग्री या उससे अधिक ढलान वाले क्षेत्रों को माना जाए अरावली
- पर्यावरणविदों को चिंता, 100 मीटर ऊंचाई के मानदंड से खनन के लिए खुल सकता है बड़ा इलाका

अरावली की परिभाषा, जो केंद्र ने दी और कोर्ट ने मानी

सुप्रीम कोर्ट ने पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समिति की सिफारिशों को स्वीकार किया है। समिति के अनुसार, अरावली जिले में स्थित कोई भी भू-आकृति, जिसकी ऊंचाई स्थानीय भू-स्तर से 100 मीटर या उससे अधिक हो, 'अरावली पहाड़ी' मानी जाएगी। वहीं, 500 मीटर की दूरी के भीतर स्थित दो या अधिक ऐसी पहाड़ियां मिलकर 'अरावली रेंज' कहलाएंगी।

मुख्य सचिवों के सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा

विनिर्माण को बढ़ावा दें, सेवा क्षेत्र को मजबूत बनाएं

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 28 दिसंबर।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत को सेवा क्षेत्र में महाशक्ति बनाने के लिए रविवार को राज्यों से विनिर्माण को बढ़ावा देने और सेवा क्षेत्र को मजबूत बनाने समेत विभिन्न आह्वान किए।

मुख्य सचिवों के पांचवें राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि भारत के पास दुनिया का खाद्य भंडार बनने की क्षमता है और देश को उच्च मूल्य वाली कृषि, बागवानी, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन और मत्स्य पालन की दिशा में बढ़ना चाहिए ताकि यह एक प्रमुख खाद्य निर्यातक बन सके। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन ऐसे समय में आयोजित हो रहा है जब भारत अगली पीढ़ी के सुधारों को देख रहा है। भारत 'रिफार्म एक्सप्रेस' पर सवार हो चुका है और इसका प्राथमिक इंजन देश के युवा और विभिन्न आयुवर्ग की जनसंख्या है। यही कारण है कि सरकार का यह प्रयास है कि इस जनसंख्या को सशक्त किया जाए।

मोदी ने 'एक्स' पर किए गए सिलसिलेवार पोस्ट में कहा कि राज्यों से विनिर्माण और व्यापार में सुगमता को बढ़ावा देने और सेवा क्षेत्र को मजबूत बनाने का आह्वान किया। आइए हम भारत को एक वैश्विक सेवा महाशक्ति बनाने का लक्ष्य रखें। यह तीन दिवसीय सम्मेलन 26 दिसंबर को शुरू हुआ जिसका विषय 'विकसित भारत के लिए मानव पूंजी' है।

उन्होंने इस बारे में अपने विचार साझा किए कि केंद्र और राज्य मिलकर भारत को 'आत्मनिर्भर' बनाने, गरीबों को सशक्त करने और 'विकसित भारत' का सपना साकार करने के लिए किस तरह से काम कर सकते हैं। शासन में गुणवत्ता के महत्व पर बात की। शासन में गुणवत्ता, सेवाओं की उपलब्धता में गुणवत्ता, और निर्माण में गुणवत्ता। मोदी ने कहा कि उन्होंने शासन और सेवा वितरण के मामलों में एक नई कार्य संस्कृति स्थापित करने के लिए उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों पर प्रकाश डाला।

Jansatta Page No-8

आभासी मुद्रा की दुनिया चमकदार, लेकिन एहतियात भी जरूरी

अगर कोई पूछे कि भविष्य की मुद्रा क्या होगी, तो जवाब होगा डिजिटल या आभासी। आने वाले वक्त में बटुए में नोट नहीं होंगे, एक क्लिक से सभी लेनदेन होंगे। सोचिए, पैसा एक संदेश की तरह फटाक से कहीं भी पहुंच जाए न बैंक की जरूरत, न दिनों का इंतजार, न कोई सीमा की रुकावट। डिजिटल मुद्रा को विश्व के कई केंद्रीय बैंक प्रयोग के तौर पर अपना रहे हैं। क्रिप्टो भी एक डिजिटल या आभासी मुद्रा है जो लेनदेन को सुरक्षित करने के लिए क्रिप्टोग्राफी (एन्क्रिप्शन) का उपयोग करती है। इसका कोई भौतिक रूप नहीं होता है और यह किसी केंद्रीय बैंक या सरकार से नियंत्रित नहीं होती।

यह मुद्रा डिजिटेक पर आधारित एक विकेंद्रित प्रणाली पर काम करती है, जो ब्लाकचेन नामक एक सार्वजनिक बहीखाते (लेजर) पर सभी लेनदेनों को दर्ज रखती है। इससे यह सुरक्षित और पारदर्शी होती है। क्रिप्टो मुद्रा जटिल कूटलेखन कलन विधि (एन्क्रिप्शन एल्गोरिदम) से सुरक्षित होती है। इससे इसकी नकल करना या धोखाधड़ी करना मुश्किल होता है। क्रिप्टो अब केवल निवेश के लिए ही नहीं है, बल्कि यह भुगतान का एक तरीका भी बन रही है। इसे मुद्रा, निवेश और लेनदेन के तौर पर अपनाया जा रहा है। क्रिप्टो मुद्रा को भारत में शीर्ष अदालत द्वारा दी गई वैधता, टेस्ला प्रमुख एलन मस्क के निवेश, डोनाल्ड ट्रंप के परिवार के क्रिप्टो व्यापार में उतरने और अमेरिका में नया कानून बनाकर इसको अमेरिका में मुख्यधारा की आर्थिक व्यवस्था का हिस्सा बनाने के फैसले ने इस आभासी मुद्रा के भविष्य को संभावनाशील बना दिया है।

ब्लाकचेन तकनीक

सभी लेनदेन ब्लाक में होते हैं और एक शृंखला (चेन) में जुड़ते जाते हैं। इससे इन्हें बदलना असंभव हो जाता है। इसमें लेनदेन साझा डिजिटल बहीखाते पर दर्ज होते हैं। इन्हें कोई भी देख सकता है। एक बार ब्लाकचेन में दर्ज होने के बाद लेनदेन को बदला नहीं जा सकता। किसी तीसरे पक्ष (जैसे बैंक, सरकार) की मदद के बिना सीधे किसी और को क्रिप्टो भेजा और प्राप्त किया जा सकता है। क्रिप्टो मुद्रा में निवेश करने के लिए, एक क्रिप्टो एक्सचेंज पर अपना खाता बनाना होगा। आधार/पैन कार्ड के साथ केवाईसी पूरी करनी होगी। डिजिटल भुगतान विधियों से पैसे जमा करने होंगे। फिर अपनी पसंद की क्रिप्टो मुद्रा खरीदनी होगी। इन्हें वालेट में सुरक्षित रखना होगा। ध्यान रहे कि क्रिप्टो की दुनिया चमकदार जरूर है, लेकिन इसका बाजार बहुत अस्थिर है, इसलिए केवल उतना ही निवेश करें जितना खोने का जोखिम उठा सकें। पहले इस बाजार को समझें। निवेश पोर्टफोलियो का पांच से 10 फीसद हिस्सा एक अच्छी शुरुआत हो सकता है। काइनस्विच, वजीरएक्स, झेडक्ल्यू,काइन डीसीएक्स आदि क्रिप्टो एक्सचेंज हैं। बिटकाइन, एथेरियम, लाइटकाइन, रिपल, डागकोइन आदि क्रिप्टो मुद्रा हैं। बाजार में पांच हजार से अधिक डिजिटल टोकन उपलब्ध हैं। बिटकाइन के अलावा अन्य क्रिप्टो मुद्रा को मूल क्रिप्टो मुद्रा से अलग करने के लिए सामूहिक रूप से अल्टकाइन में जाना जाता है। बिटकाइन-केंद्रित ईटीएफ या क्रिप्टो शेयर खरीदने जैसे अन्य तरीके भी अपनाए जा सकते हैं। साल 2009 में स्थापित

क्रिप्टो *करामात*

बिटकाइन पहली क्रिप्टो मुद्रा थी। इस मुद्रा को सातोशी नाकामोतो ने विकसित किया था। इनके बारे में माना जाता है कि यह किसी व्यक्ति या समूह का छद्म नाम है। इनकी सटीक पहचान अभी भी अज्ञात है। आज भी यह सबसे प्रचलित आभासी मुद्रा है। 2015 में विकसित हुआ एथेरियम एक ब्लाकचेन मंच है। इसकी अपनी क्रिप्टो मुद्रा है। इसे ईथर या एथेरियम कहा जाता है। बिटकाइन के बाद यह सबसे लोकप्रिय क्रिप्टो मुद्रा है।

क्रिप्टो सामान्य पैसे से अलग कैसे

हमारा आम पैसा (रुपया, डालर, येन) सरकार और बैंक चलाते हैं। ये जब चाहें ज्यादा छाप सकते हैं। बैंक पैसे भेजने पर शुल्क लेते हैं और विदेश भेजने में कई दिन लग जाते हैं। क्रिप्टो सब उल्टा करती है। यह ब्लाकचेन से चलती है, जो एक ऐसी डिजिटल किताब है, जिसमें कोई धोखा नहीं कर सकता। कुल कितना पैसा होगा, पहले से तय है। बिटकाइन कुल 2.1 करोड़ ही बनेगा। इसमें हर अंतरण सबको दिखता है, लेकिन नाम छुपा रहता है। एक बार हो गया तो कोई बदल नहीं सकता। क्रिप्टो को दुनिया क्यों पसंद कर रही है, क्योंकि पूरी आजादी है। अपना पैसा खुद के नियंत्रण में है। बैंक कभी खाता जब्त नहीं कर सकता। यह निवेश व मुद्रा अंतरण का अच्छा मंच है। बिना बैंक के कर्ज लेना-देना, खास डिजिटल चीजें खरीदना (एनएफटी) और खेल खेलकर पैसा कमाना आदि संभव है। हर कोई जुड़ सकता है, सिर्फ इंटरनेट चाहिए। लेकिन सरकारी नियमन न होने से जोखिम भी बहुत है।

सावधानी जरूर रखें

क्रिप्टो की कीमत बहुत ऊपर-नीचे होती है। कभी बहुत तेज बढ़ती है, कभी गिर भी जाती है। इसलिए सिर्फ उतना पैसा लगाएं जितना खोने पर दुख न हो। अच्छे से जानकारी जुटाएं और सुरक्षित तरीके से क्रिप्टो का इस्तेमाल करें। क्रिप्टो सिर्फ एक नया पैसा नहीं है, बल्कि यह आजादी, तेजी और नए विचारों का आंदोलन है।

-दिव्या तंवर
साइबर सुरक्षा शिक्षाविद् व डिजिटल विशेषज्ञ

Jansatta Page No-7

हरियाणा के पिंजौर से लाकर पेंच में आठ महीने तक चला प्रशिक्षण | अद्भुत | गिद्धों के व्यवहार को जानने के लिए की गई यह कवायद

पेंच बाघ अभयारण्य से नासिक, 17 दिनों में 750 किमी तक की उड़ान

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 28 दिसंबर।

महाराष्ट्र के पेंच बाघ अभयारण्य से इस महीने की शुरुआत में छोड़ा गया 'जे132' नामक एक लंबी चोंच वाला गिद्ध 17 दिनों में करीब 750 किलोमीटर की दूरी तय कर नासिक जिले में त्र्यंबकेश्वर के पास अंजनेरी पहाड़ियों के करीब पहुंच गया है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी।

संयुक्त संरक्षण कार्यक्रम के तहत 11 दिसंबर को छोड़ा गया था *शोधकर्ताओं* के अनुसार, यह गिद्ध नागपुर, वर्धा, यवतमाल, हिंगोली, वाशिम, बुलढाणा, जालना और छत्रपति संभाजीनगर जिलों से होते हुए 27 दिसंबर को नासिक क्षेत्र में दाखिल हुआ और अंजनेरी से लगभग 38 किलोमीटर दूर एक स्थान पर पहुंच गया।

यह गिद्ध उन 14 पक्षियों के दूसरे समूह का हिस्सा है, जिन्हें हरियाणा के पिंजौर से लाकर पेंच में आठ महीने तक प्रशिक्षित किया गया था।

राज्य वन विभाग और 'बांबे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' (बीएनएचएस) के संयुक्त संरक्षण कार्यक्रम के तहत इस गिद्ध को 11 दिसंबर को छोड़ा गया था। बीएनएचएस के शोधकर्ताओं के अनुसार, यह गिद्ध नागपुर, वर्धा, यवतमाल, हिंगोली, वाशिम, बुलढाणा, जालना और छत्रपति संभाजीनगर जिलों से होते हुए 27 दिसंबर को नासिक क्षेत्र में दाखिल हुआ और अंजनेरी से लगभग 38 किलोमीटर दूर एक स्थान पर पहुंच गया। अधिकारियों ने बताया कि ट्रैक किए जा रहे इस गिद्ध के सटीक गंतव्य को उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए गोपनीय रखा गया है।

बीएनएचएस शोधकर्ता मनन सिंह ने बताया कि यह पक्षी शाम को विश्राम करता है, सुबह भोजन करता है और फिर अगले स्थान के लिए उड़ जाता है। उसकी गतिविधियों से संकेत मिलता है कि अपनी यात्रा के दौरान इसने कम से कम दो बार भरपेट खुराक ली है। यह गिद्ध उन 14 पक्षियों के दूसरे समूह का हिस्सा है, जिन्हें हरियाणा के पिंजौर से लाकर पेंच में आठ महीने तक प्रशिक्षित किया गया था। उन्होंने बताया कि इनमें सफेद पीठ वाले आठ और लंबी चोंच वाले पांच गिद्ध शामिल थे, जिनकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए उन पर जीपीएस टैग लगाए गए हैं। मनन ने बताया कि प्रशिक्षण के बाद इन पक्षियों को 11 दिसंबर को महाराष्ट्र के मुख्य वन्यजीव वार्डन श्रीनिवास रेड्डी और बीएनएचएस के अध्यक्ष प्रवीण परदेशी ने छोड़ा था।

अधिकारियों ने बताया कि 12 से 15 दिसंबर के बीच छोड़े गए सभी गिद्धों को पेंच में जंगली गिद्धों के साथ खाते हुए देखा गया। मुक्त किए जाने के बाद सफेद पीठ वाले गिद्ध ज्यादातर पेंच क्षेत्र के आसपास ही रहे, जबकि लंबी चोंच वाले गिद्धों ने दूरदराज के क्षेत्रों की यात्रा शुरू कर दी है।

अधिकारियों ने बताया कि इसी समूह का एक अन्य गिद्ध 'एलबीवी एबी1' गढ़चिरोली जिले के धानोरा तक पहुंच गया है, जो गिद्धों का एक ज्ञात प्राकृतिक आवास है। बीएनएचएस के निदेशक किशोर रिठे ने कहा कि इन गिद्धों पर जीपीएस ट्रांसमीटर लगाए गए हैं, ताकि वैज्ञानिक तौर पर यह पता लगाया जा सके कि वे कहां जा रहे हैं, किन जगहों पर रह रहे हैं और कैसे जीवित रह रहे हैं। जे132 की इस यात्रा ने पक्षी प्रेमियों में काफी दिलचस्पी जगाई है।

Jansatta Page No-1

प्रो. विन्ध्यवासिनी पाण्डेय
डायरेक्टर, सेंटर फार हिमालयन स्टडीज, दिल्ली विवि

शुभम कुमार सानु
असिस्टेंट प्रोफेसर, इंद्रप्रस्थ कालेज, दिल्ली विवि

आजकल

अरावली के संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता

अरावली पहाड़ियों से जुड़ी हालिया चिंताओं पर सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया है। शीर्ष अदालत का यह दखल अरावली पहाड़ियों की बदली हुई परिभाषा के कारण हुए सार्वजनिक विरोध और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के बाद आया है। यह सही है कि प्राकृतिक संरक्षण के साथ ही हमें आधुनिक विकास की ओर भी अग्रसर होना चाहिए, परंतु यह प्रकृति की कीमत पर तो कतई नहीं होना चाहिए। अरावली को संसाधन के रूप में न देखकर हमें उसे एक प्राकृतिक धरोहर के रूप में देखना होगा। ऐसे दृष्टिकोण अपनाने से ही अरावली को बचाया जा सकता है

आधुनिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अरावली को नष्ट करना उचित नहीं है। फाइल

अरावली पर बढ़े विवाद के मद्देनजर केंद्र सरकार ने दिल्ली से लेकर गुजरात तक अरावली की रक्षा के लिए नए खनन लीज पर रोक लगा दी है। वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने इस बात की पुष्टि की है कि अरावली वाले राज्यों व केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा व गुजरात में समान रूप से कोई भी नई खनन लीज नहीं दी जाएगी। पारिस्थितिकी भूविज्ञान एवं परिदृश्य के आधार पर केंद्र सरकार ने इंडियन काउंसिल आफ फारेस्ट्री रिसर्च एंड एजुकेशन (आइसीएफआरई) को निर्देशित किया है कि वह अध्ययन करके पहले से प्रतिबंधित क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों की पहचान करें, जहां खनन कार्य को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा सके।

इसके साथ ही आइसीएफआरई को संपूर्ण अरावली के लिए एक वैज्ञानिक और व्यापक सस्टेनेबल माइनिंग मैनेजमेंट प्लान तैयार करने की भी जिम्मेदारी है। कार्ययोजना को व्यापक स्तर पर पर्यावरण पर प्रभाव आकलन, संवेदनशील क्षेत्र की पहचान, क्रियान्वयन के उपाय एवं किस हद तक खनन कार्य हो सकते हैं, उनके आधार पर तैयार किया जाएगा। जिसके पश्चात कार्ययोजना को सार्वजनिक कर विभिन्न पक्षों के सुझावों को भी शामिल किया जाएगा। इसके साथ ही, वर्तमान में चल रहे सभी खनन पर भी कड़ी निगरानी रखने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि पर्यावरणीय मानकों का सुचारु रूप से पालन हो सके। अब अरावली क्षेत्र में सस्टेनेबल माइनिंग के सभी नियमों को पूर्ण रूप से अनुकरण करना होगा जिससे पर्यावरण का काम से कम नुकसान हो।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में भारत की प्राचीनतम पर्वतमाला अरावली को पर्वत का हिस्सा मानकर, किसे संरक्षित किया जाएगा और किस क्षेत्र को खनन के माध्यम से पूंजीपतियों के हवाले कर आर्थिक प्रगति की राह खोली जाएगी, उस पर निर्णय आया है। यह अरावली को उसके आसपास के जमीन से 100 मीटर की ऊंचाई एवं 500 मीटर के दायरे के प्रविधान के आधार पर तय किया गया है। इस नए प्रविधान एवं परिभाषा के अनुसार विशेषज्ञों को भविष्य में इस क्षेत्र में और भी खनन एवं अरावली पर खतरे की आशंका नजर आ रही है। वे भारत के भविष्य, पर्यावरण एवं अरावली क्षय की स्थिति में सामान्य जनमानस के जीवन पर पड़ने वाले खतरे को लेकर चिंतित हैं। तो वहीं सरकार का मानना है कि यह परिभाषा कोई नई नहीं है। राजस्थान की पहले की सरकार इस परिभाषा को लाई थी। नई परिभाषा और भी स्पष्ट है जो भविष्य में अरावली के संरक्षण में और भी कारगर होगी। अभी भी 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा संरक्षित है और खनन की अनुमति केवल 0.19 प्रतिशत क्षेत्र तक ही सीमित है।

परंतु कुछ प्रमुख सवाल जनमानस के मन में यह है कि अगर इस परिभाषा को राजस्थान सरकार की सिफारिश पर एक बार खारिज किया गया था तो अब इसे क्यों अपनाया गया है? सस्टेनेबल माइनिंग की अनुमति क्यों दी जा रही है? अरावली की ऊंचाई उसके आसपास के क्षेत्र से क्यों मापी जा रही है? जबकि अंतरराष्ट्रीय पैमाने पर समुद्र तल के आधार पर किसी चीज की ऊंचाई तय की जाती है। उदाहरणस्वरूप हम माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई भी समुद्र तल के हिसाब से तय करते हैं। इन सभी आशंकाओं के बीच लोगों में अपने पहाड़, उसके पर्यावरण के लिए चिंता है, क्योंकि यह उनके भविष्य से जुड़ा हुआ है।

महत्व : मानव जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जहां इस क्षेत्र के लोगों के लिए अरावली पर्वत ने अपनी भूमिका न निभाई हो। अगर आपको स्वच्छ हवा चाहिए तो अरावली पर लगे पेड़ पौधे उसके स्रोत हैं। स्वच्छ पानी आप चंबल, साबरमती, लूणी नदी से पी सकते हैं। आवास इसी की लकड़ी एवं पत्थर से बन रहे हैं।

अरावली की समस्याएं : नए मापदंड ने अरावली की उभेद्यता को बढ़ाया है। इसके साथ ही बहुत सारे ऐसे आयाम भी हैं जिन्होंने मानव विकास के नाम पर अरावली को सतत रूप से कमजोर करने का काम किया है। इसमें खनन मुख्य भूमिका निभाता है। संगमरमर, रेत, पत्थर एवं खनिजों के लिए दैनिक तौर पर अरावली को खोदा जा रहा है। राजस्थान में ही बीते पांच वर्षों में 27 हजार से अधिक अवैध खनन का मामला सामने आया है। जिसमें महज 3200 यानी मात्र 11 प्रतिशत मामलों में ही एफआइआर दर्ज की गई है। इसके अलावा, शहरीकरण, पहाड़ का अवैध कब्जा, वन क्षेत्र का क्षय, अत्यधिक भूमि चारण, वेस्ट डंपिंग एवं जलवायु परिवर्तन भी अरावली को कमजोर बना रहा है। इस कड़ी में विशेषज्ञों के अनुसार, अवैज्ञानिक परिभाषा के आने से अरावली की स्थिति और भी बदतर हो सकती है। इन समस्याओं को खारिज करने के बजाय हमें इस पर सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ समाधान की ओर बढ़ना चाहिए, न कि विवाद की ओर।

बचाव की जरूरत : अरावली पर्वत ने पश्चिमी भाग से आने वाले प्राकृतिक से लेकर मानव जनित विपरीत परिस्थितियों से भारत की भूमि को बचा कर रखा है। चाहे वह सर्द मौसम की पश्चिम से आने वाली ठंडी हवा हो या फिर गर्मी में लू वाली हवा या फिर मध्यकालीन भारत पर दुश्मनों का आक्रमण या थार रेगिस्तान। दिल्ली की हवा की गुणवत्ता तो जगजाहिर है। अरावली के होते हुए जब हवा की गुणवत्ता ऐसी है, तो इसके क्षय होने पर कितनी खराब स्थिति हो सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

दिल्ली में रिज क्षेत्र का पर्याप्त संरक्षण

लंबे अरसे से चल रहे एक पर्यावरणीय मामले में निर्णय सुनाते हुए उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली रिज क्षेत्र की रक्षा के लिए केंद्र सरकार को दिल्ली रिज मैनेजमेंट बोर्ड (डीआरएमबी) को वैधानिक दर्जा देने और इसे रिज एवं मोरफोलाजिकल रिज से संबंधित सभी मामलों के लिए सिंगल विंडो अथारिटी बनाने का निर्देश दिया। पीठ ने वन अधिनियम के अंतर्गत दिल्ली रिज की अंतिम अधिसूचना जारी करने, मोरफोलाजिकल रिज की पहचान करने एवं नौ मई, 1996 से दिल्ली रिज एवं मोरफोलाजिकल रिज पर हुए अतिक्रमण को हटाने की बात की है। इसके पश्चात केंद्रीय पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने न्यायालय के आदेश का पालन करते हुए पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के धारा 3(3) के तहत डीआरएमबी को नए वैधानिक अधिकारों के साथ पुनर्गठित किया है। बोर्ड में 13 सदस्य हैं एवं अध्यक्ष दिल्ली के मुख्य सचिव हैं। उल्लेखनीय है कि 1995 में ही सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद डीआरएमबी का गठन हुआ था, परंतु वह गैर वैधानिक था। इससे रिज क्षेत्र पर विभिन्न एजेंसियों के मध्य दायित्वों की अस्पष्टता थी, जिसके परिणामस्वरूप रिज संरक्षण की दिशा में अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सका। अब इस बोर्ड को वैधानिक दर्जा मिलने से रिज क्षेत्र पर अतिक्रमण रोकने एवं हटाने, इसके संरक्षण करने, प्राकृतिक अखंडता बनाए रखने, भूमि उपयोग नियंत्रण एवं निगरानी स्थिति की बहाली सुनिश्चित करने में काफी मददगार हो सकती है।

दिल्ली रिज मूल रूप से अरावली पर्वतमाला का उत्तरी विस्तार है, जो दक्षिण-पश्चिम में महिपालपुर से शुरू होकर उत्तर-पूर्व में वजीराबाद तक लगभग 35 किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। मुख्य रूप से यह चार प्रमुख क्षेत्र में विभाजित है। उत्तरी रिज (दिल्ली विश्वविद्यालय के पास), मध्य रिज (सदर बाजार, धौला कुआं क्षेत्र), दक्षिणी मध्य रिज (महरौली एवं जेएनयू क्षेत्र) एवं दक्षिणी रिज (तुगलकाबाद क्षेत्र) जो दिल्ली रिज का सबसे बड़ा एवं सबसे अधिक अतिक्रमण से प्रभावित क्षेत्र है। वहीं मोरफोलाजिकल रिज ऐसी बनावट वाले इलाके हैं जिसमें रिज जैसी विशेषताएं होती हैं।

दिल्ली रिज एवं मोरफोलाजिकल रिज दिल्ली के लिए पर्यावरणीय दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण भू-संरचना है। इस पर मुख्यतः उष्णकटिबंधीय शुष्क कंटीदार वन पाए जाते हैं जिस कारण से इसे दिल्ली का ग्रीन लंग भी कहा जाता है। इसके पेड़-पौधे तापमान को काफी हद तक नियंत्रित कर कार्बन सिंक के रूप में कार्य करते हैं। वायु गुणवत्ता सुधार एवं पीएम 2.5 व पीएम 10 को प्राकृतिक रूप से शोषित कर स्वच्छ हवा का मूल स्रोत है। स्थानिक जैव विविधता एवं भूजल संरक्षण में भी यह काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंतु साल दर साल बढ़ते शहरीकरण के दबाव, अवैध अतिक्रमण, कचरा जमाव एवं लापरवाही के कारण इसके क्षेत्र का क्षय हो रहा है। अब तक दिल्ली रिज के लगभग 7770 हेक्टेयर क्षेत्र में से महज 103 हेक्टेयर यानी की 1.33 प्रतिशत क्षेत्र ही भारतीय वन अधिनियम के अंतर्गत आरक्षित वन क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया है।

इसी क्रम में हाल ही में दिल्ली सरकार ने दक्षिणी रिज के लगभग 4080 हेक्टेयर क्षेत्र को आधिकारिक रूप से आरक्षित वन क्षेत्र घोषित किया है, जो सराहनीय कार्य है। इससे इन क्षेत्रों में अतिक्रमण एवं गैर-वन गतिविधियों पर रोक लगने की उम्मीद है। परंतु अभी भी रिज के अन्य हिस्सों को अधिसूचित किया जाना बाकी है। डीआरएमबी का वैधानिक अधिकार के साथ गठन पर्यावरणीय दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण कदम है, जिससे रिज क्षेत्र के संरक्षण कार्यों को गति मिलने की उम्मीद है। इस दिशा में जमीनी स्तर पर भी संस्था को सुचारु एवं कारगर रूप से कार्य करना होगा। इसके साथ ही विभिन्न एजेंसियों के बीच भी बेहतर तालमेल की आवश्यकता है, ताकि दिल्ली के वन क्षेत्र का आने वाले वर्षों में विस्तार हो सके एवं गैस चैंबर जैसी स्थिति से दिल्लीवासियों को छुटकारा मिल सके। **(प्रो. शुभम कुमार सानु)**

कैसा हो आम बजट

दुनिया बदलाव के दौर से गुजर रही है। व्यापार के पहले से स्थापित तौर-तरीकों में बदलाव आ रहा है। अमेरिका और चीन जैसे देश दूसरे देशों से अपने हित में फैसले कराने के लिए व्यापार को हथियार बना रहे हैं। संरक्षणवादी उपाय आम हो गए हैं। ऐसे में व्यापार और सप्लाई चेन के मोर्चे पर चुनौतियां बहुत बढ़ गई हैं। भारत भी इससे प्रभावित हुआ है। अमेरिका की टैरिफ नीतियों से देश के निर्यातकों पर दबाव बढ़ गया है। ऐसे में आगामी आम बजट बेहद अहम हो गया है। अपेक्षा है कि आगामी एक फरवरी को आने वाला बजट आम लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के साथ उद्योग और वैश्विक व्यापार से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए रोडमैप प्रस्तुत करेगा। तमाम हितधारक बजट के लिए सरकार को अपने-अपने सुझाव दे रहे हैं। ऐसे में आम बजट कैसा होना चाहिए, इसकी पड़ताल आज प्रासंगिक है...

अर्थव्यवस्था के सकारात्मक पक्ष

आर्थिक वृद्धि दर

वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही (जुलाई-अक्टूबर) में भारत की जीडीपी 8.2 प्रतिशत की प्रभावशाली दर से बढ़ी, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 5.6 प्रतिशत थी। यह बीती आठ तिमाहियों में सबसे तेज गति है। इस गति को मजबूत घरेलू खपत, कृषि उत्पादन में वृद्धि और सरकारी खर्च में बढ़ोतरी से बल मिला। इस मजबूती को देखते हुए रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष के लिए आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान बढ़ाकर 7.3 प्रतिशत कर दिया है। आयकर में कटौती, जीएसटी 2.0 सुधार मौद्रिक सहजता और कम खाद्य मुद्रास्फीति की मदद से खपत में मजबूती आने की उम्मीद है। इससे अर्थव्यवस्था का चक्का और तेजी से घूमेगा और सरकार के खजाने में ज्यादा राशि आएगी।

8.2% की प्रभावशाली दर से बढ़ी है जुलाई-अक्टूबर तिमाही में भारत की जीडीपी, पिछली आठ तिमाही में सबसे अधिक

सेवाओं के निर्यात में लचीलापन

अप्रैल-सितंबर 2025 के बीच भारत के सेवाओं के निर्यात में 6.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो वस्तु निर्यात के 3.1 प्रतिशत से अधिक है। वित्त वर्ष 2024-25 में कुल निर्यात में सेवाओं का योगदान लगभग 46.9 प्रतिशत था, जो आइटी और बिजनेस प्रोसेस मैनेजमेंट (बीपीएम), वित्तीय सेवाओं, पर्यटन और पेशेवर परामर्श में मजबूत गति से प्रेरित था। आगे चलकर, डिजिटल और ज्ञान-आधारित सेवाओं के लिए बढ़ती वैश्विक मांग, भारत के बड़े टैलेंट पूल और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में गहरे जुड़ाव के कारण दृष्टिकोण सकारात्मक बना हुआ है। वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में संभावित मंदी और डाटा केंद्रों की बढ़ती मांग भी आइटी क्षेत्र में निवेश आकर्षित करेगी, जिससे भारत से सेवाओं की मांग बढ़ेगी। एआइ, साइबर सुरक्षा, फिनटेक और जलवायु सलाहकार जैसे उभरते क्षेत्रों में चल रहे विविधीकरण से भारत की वैश्विक सेवा निर्यात केंद्र के रूप में स्थिति और मजबूत होने की उम्मीद है।

46.9% था वित्त वर्ष 2024-25 में कुल निर्यात में सेवाओं का योगदान

व्यापार समझौते

भारत की विदेश व्यापार संरचना नए समझौतों और रणनीतिक वार्ताओं के कारण तेजी से बदल रही है। 2025 तक, भारत के पास 18 मुक्त व्यापार समझौते हैं और हाल ही में ब्रिटेन और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) के साथ ऐतिहासिक समझौते किए हैं, जिससे लगभग शून्य टैरिफ और निवेश के अवसर खुले हैं। द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ बातचीत अभी चल रही है। साथ ही बाजार पहुंच को व्यापक बनाने के लिए न्यूजीलैंड के साथ हाल ही में मुक्त व्यापार समझौते को अंतिम रूप दिया गया है।

18 मुक्त व्यापार समझौते हैं भारत के पास वर्तमान में, अन्य देशों से चल रही है बात

लगातार बढ़ता पूंजीगत खर्च

प्रमुख इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों पर सरकार का पूंजीगत खर्च वित्त वर्ष 20 और वित्त वर्ष 25 के बीच 38.8 प्रतिशत बढ़ा। वित्त वर्ष 2025-26 में केंद्रीय बजट में 11.21 लाख करोड़ पूंजीगत खर्च के लिए आवंटित किए गए। अप्रैल और अगस्त 2025 के बीच, सरकार ने बजट अनुमानों का 38.5 प्रतिशत इस्तेमाल किया, जबकि पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में यह 27.1 प्रतिशत था।

38.8% बढ़ा है वित्त वर्ष 20 और 25 के बीच प्रमुख इन्फ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों पर पूंजीगत खर्च

नियंत्रण में महंगाई

आरबीआइ ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए अपने महंगाई के अनुमान को 3.1 प्रतिशत से घटाकर 2.6 प्रतिशत कर दिया है। कीमतों में लगातार नरमी बनी हुई है। यह नरमी लगातार नौ महीनों तक खाद्य वस्तुओं की कीमतों में 10.5 प्रतिशत की गिरावट के कारण हुई। इसके साथ ही अनुकूल मौसम की स्थिति, अच्छी खरीफ फसल, पर्याप्त जलाशय स्तर और खाद्यान्न का बफर स्टाक भी इसके कारण हैं। इसके अलावा, 22 सितंबर 2025 से प्रभावी जीएसटी दरों को तार्किक बनाए जाने से सीपीआइ बास्केट के लगभग 11.4 प्रतिशत हिस्से में कीमतें कम होने की संभावना है, जिससे आने वाली तिमाहियों में महंगाई में और कमी आएगी। पिछली तीन तिमाहियों में महंगाई आरबीआइ की चार प्रतिशत रेंज के दायरे में रही है।

4% की रेंज में रही है महंगाई पिछली तीन तिमाहियों में

कर और संरचनात्मक नीति सुधार

सितंबर 2025 में लागू किए गए वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) 2.0 सुधार भारत की अप्रत्यक्ष कराधान प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव है। इस बदलाव ने प्रणाली को चार दर स्लैब से घटाकर दो- पांच प्रतिशत और 18 प्रतिशत किया गया है। विलासिता वस्तुओं और तंबाकू उत्पादों के लिए 40 प्रतिशत की विशेष दर बनाई गई है। इससे प्रमुख क्षेत्रों में करों को तर्कसंगत बनाया गया। प्रत्यक्ष कर के मोर्चे पर, आयकर दर में कटौती ने खर्च योग्य आय को बढ़ाया है, जिससे निजी उपभोग और घरेलू मांग को समर्थन मिला है, खासकर मध्यम वर्ग के हाथों में। कुल मिलाकर इन उपायों से खरीदारी की शक्ति में सुधार करके, मुख्य उपभोक्ता श्रेणी में कीमतें कम करके और शहरी और अर्ध-शहरी बाजारों में ज्यादा खर्च को बढ़ावा देने से निजी खपत को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। घरों की मांग में यह नई तेजी वित्त वर्ष 2025-26 में आर्थिक वृद्धि के मुख्य ड्राइवर के तौर पर घरेलू खपत को मजबूत करेगी। इससे अर्थव्यवस्था और मजबूत होगी।

12 लाख तक की सालाना आय पर शून्य कर और आयकर दरों में कटौती ने खर्च योग्य आय को बढ़ाया है

नकारात्मक पक्ष

भू-राजनीतिक झटके और युद्ध

भू-राजनीतिक झटके प्रमुख कमजोरी बने हुए हैं। यूरोप और मध्य पूर्व में चल रहे संघर्षों और नेपाल, श्रीलंका व बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों में राजनीतिक बदलावों से भारत के लिए राजनयिक संतुलन बनाने का काम जटिल हो गया है। ये तनाव ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिजों तक पहुंच और वैश्विक कमोडिटी आपूर्ति श्रृंखलाओं में रुकावटों का खतरा पैदा करते हैं। इससे व्यापार में रुकावट, आयातित मुद्रास्फीति और व्यापक चालू खाता घाटे का जोखिम पैदा होता है। आयातित तेल व गैस और महत्वपूर्ण खनिजों पर भारत की निर्भरता वैश्विक मूल्य झटकों और आपूर्ति में रुकावटों के प्रति जोखिम को बढ़ाती है।

वैश्विक व्यापार में अस्थिरता और संरक्षणवादी कदम

बढ़ते वैश्विक संरक्षणवाद और टैरिफ में वृद्धि, मूल नियमों में बदलाव और गैर-शुल्क बाधाओं से भारतीय निर्यातकों के लिए अनिश्चितता बढ़ रही है। वैश्विक व्यापार में टकराव का जीडीपी वृद्धि पर सीधा असर 40-80 आधार अंक तक सीमित हो सकता है, लेकिन एमएसएमई और रोजगार पर इसका असर काफी ज्यादा हो सकता है। एमएसएमई जीडीपी में 30.1 प्रतिशत का योगदान देते हैं और भारत के निर्यात में इनका योगदान 45.79 प्रतिशत है। एमएसएमई लगभग 29 करोड़ लोगों को रोजगार देते हैं। निर्यात बाजारों में रुकावट या व्यापार नियमों में सख्ती से नौकरियों और आय की स्थिरता के लिए गंभीर जोखिम पैदा होता है।

40-80 आधार अंक तक रह सकता है वैश्विक व्यापार में टकराव का जीडीपी वृद्धि पर असर

पूंजी का बाहर जाना और रुपये पर दबाव

2025 में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की निकासी के कारण आरबीआइ के दखल के बावजूद रुपये पर लगातार दबाव बना हुआ है। फरवरी और अक्टूबर 2025 के बीच रुपया 6 प्रतिशत कमजोर हुआ, जबकि 2024 की इसी अवधि में यह सिर्फ 0.6 प्रतिशत कमजोर हुआ था, जो हाल के वर्षों में सबसे बड़ी गिरावट है। यह कमजोरी तब आई है जब डालर प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले कमजोर हुआ है, जो भारत की सापेक्ष कमजोरी को उजागर करता है। वैश्विक जोखिम से बचने, टैरिफ की चिंताओं और कारपोरेट कमाई में कमी के कारण विदेशी निवेशकों ने 26 दिसंबर तक इक्विटी बाजारों से 18 अरब डालर निकाल लिए हैं। हालांकि, पूंजी का बाहर जाना कोई नई बात नहीं है, लेकिन यह ट्रेंड रुपये के और कमजोर होने को लेकर चिंता पैदा करता। इससे आयात लागत बढ़ने के साथ महंगाई का दबाव बढ़ सकता है।

18 अरब डालर से अधिक निकाले हैं विदेशी निवेशकों ने इक्विटी बाजारों से टैरिफ चिंताओं और कारपोरेट कमाई में कमी के कारण

सामाजिक सुरक्षा पर जोर दे सरकार

विकास सिंह
विशेषज्ञ, समाज विज्ञान

> पिछले करीब एक दशक में जनकल्याण के तंत्र का प्रभावी विस्तार हुआ है। अब जरूरत इस बात की है कि सरकार नीतियों को कैश ट्रांसफर से सबको सामाजिक सुरक्षा मुहैया कराने की ओर ले जाए। इससे लोगों में आर्थिक सुरक्षा का भाव पैदा होगा और खपत में भी तेजी आएगी

भारत की अर्थव्यवस्था ने चलना सीख लिया है। लेकिन उसने अभी तक यह नहीं सीखा है कि जो लोग ठोकर खाते हैं, उन्हें हमेशा के लिए पीछे न छोड़ा जाए। मोटे तौर पर तस्वीर तसल्ली देने वाली है। छह प्रतिशत से ज्यादा ग्रोथ अब लक्ष्य नहीं, बल्कि बेसलाइन बन गई है। सड़कों, रेलवे और डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर में सरकारी निवेश दिख रहा है। महंगाई मोटे तौर पर नियंत्रण में रही है। फिर भी, ग्रोथ का अनुभव अभी भी नाजुक बना हुआ है। गरीबी कम हुई है, लेकिन आर्थिक सुरक्षा उस हिसाब से नहीं बढ़ी है। आने वाले केंद्रीय बजट को इस कमी का सामना करना होगा।

देश की पुरानी समस्याएं खत्म नहीं हुई हैं, यह थोड़ी कम जरूर हुई हैं। गरीबी कम हुई है, लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर आबादी की संख्या अब भी काफी अधिक है। हाल के नेशनल सैंपल सर्वे के खपत के आंकड़ों से पता चलता है कि बड़ी संख्या में परिवार गरीबी रेखा से ठीक ऊपर हैं। उनके

है। एक मेडिकल इमरजेंसी, कम बारिश या नौकरी जाने से वर्षों की तरक्की खत्म हो सकती है। यह कमजोरी परिवारों की बैलेंस शीट में दिखती है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि महामारी के बाद परिवारों की कुल बचत कई दशकों के निचले स्तर पर आ गई, जबकि जीडीपी ग्रोथ बेहतर हो गई थी। देश में खपत को लेकर लोगों में सतर्कता का भाव दिखता है। भारत बढ़ रहा है, लेकिन लोगों में वह भरोसा नहीं दिखता है जो उनकी आय में लगातार वृद्धि के बाद आता

हुआ है। डिजिटल पहचान, बैंक खाते और सीधे ट्रांसफर ने लीकेज को कम किया है और पहुंच में सुधार किया है। अब राहत एक दशक पहले की तुलना में तेजी से और ज्यादा अनुमानित तरीके से मिलती है।

लेकिन राहत लचीलापन नहीं है। स्वास्थ्य संबंधी झटके अभी भी परिवारों को गरीब बनाने का सबसे बड़ा कारण हैं। अनौपचारिक श्रमिकों के पास अभी भी राज्यों और नौकरियों में पोर्टेबल सोशल सिक्योरिटी नहीं है। इसलिए बजट

जाना चाहिए। प्राइमरी हेल्थकेयर सुविधाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। हर कर्मचारी को सामाजिक सुरक्षा मिलनी चाहिए। रोजगार भारत की सबसे बड़ी कमजोरी है। मैन्यूफैक्चरिंग उत्पादन बढ़ा है, लेकिन रोजगार सृजन पीछे रह गया है। सार्वजनिक पूंजीगत व्यय जरूरी है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। नौकरियां तब पैदा होती हैं जब कंपनियां बड़े पैमाने पर काम करती हैं, निर्यात करती हैं। अभी भी भारत का उद्यम ढांचा अविकसित है।

बहुत सारी कंपनियां अनुपालन की सीमा से बचने के लिए छोटी बनी रहती हैं और बहुत कम कंपनियां इतनी बड़ी हो पाती हैं कि वे विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। इसलिए क्रेडिट गारंटी, टैक्स इंसेंटिव और नियमन के सरलीकरण को स्पष्ट रूप से पैमाने, निर्यात और पेरोल वृद्धि से जोड़ा जाना चाहिए। लेबर कोड को कानून की किताबों से निकाल कर जमीनी स्तर पर लागू करना चाहिए। इससे श्रमिकों की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। रोजगार

आपकी आवाज

भारत की अर्थव्यवस्था अच्छी चल रही है। विकास दर सात प्रतिशत से ज्यादा है और महंगाई भी कम हो गई है। लेकिन आम आदमी, खासकर मध्यम वर्ग, अभी भी परेशान है। रोजमर्रा का खर्च, महंगाई और नौकरियों की कमी से जीवन मुश्किल हो रहा है। लोगों की कमाई बढ़ाने और खर्च करने की ताकत देने की जरूरत है। आगामी बजट में आम लोगों की जिंदगी बेहतर बनाने के लिए सरकार को बड़े फैसले लेने चाहिए। — अमन वाधवान

वर्तमान में देश की सबसे बड़ी समस्या रोजगार की है। बड़ी संख्या में कालेज से निकलने वाले युवाओं को रोजगार मुहैया कराना सरकार की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिए मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर को मजबूत बनाना होगा। मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर बड़ी संख्या में नौकरियां पैदा करने में सक्षम है। ऐसे में सरकार को इस दिशा में हर संभव प्रयास करने चाहिए। — पवन शर्मा

आपरेशन सिंदूर में यह साफ दिखा कि चीन सामने आए बिना पाकिस्तान की मदद कर रहा था। इनका रणनीतिक गठजोड़ देश की सुरक्षा चुनौतियों को गंभीर बनाता है। इससे निपटने के लिए रक्षा क्षेत्र के लिए आवंटन में बड़ी वृद्धि की जरूरत है।

एमएसएमई को बनाएं सक्षम

अनिल भारद्वाज
महानिदेशक, फिस्मे एवं सदस्य, आर्थिक सलाहकार समूह, उत्तर प्रदेश शासन

> आयकर छूट सीमा बढ़ाने और जीएसटी ढांचे को सरल बनाए जाने से करीब तीन लाख करोड़ रुपये की अतिरिक्त मांग पैदा होगी। एमएसएमई को इस लायक बनाना होगा कि वह मांग को पूरा कर सकें। वरना अतिरिक्त मांग का फायदा छोटी कंपनियों को नहीं मिल पाएगा

भारतीय अर्थव्यवस्था एक ऐसे दौर में प्रवेश कर रही है जहां मांग उसके विकास की सबसे बड़ी चालक शक्ति बनकर उभर रही है। केंद्र सरकार द्वारा व्यक्तिगत आयकर छूट सीमा में उल्लेखनीय वृद्धि और जीएसटी ढांचे का सरलीकरण किए जाने से आम उपभोक्ताओं के हाथों में बड़ी मात्रा में अतिरिक्त क्रय शक्ति दी है। अनुमान है कि इन फैसलों से अर्थव्यवस्था में लगभग तीन लाख करोड़ रुपये की अतिरिक्त मांग पैदा होगी।

परंतु इस मांग-उत्प्रेरित विकास के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या यह मांग देश के भीतर, विशेषकर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) द्वारा पूरी की जा सकेगी? यदि ऐसा नहीं हुआ, तो यह मांग आयात में बदल जाएगी और रोजगार, उद्यमिता तथा स्थानीय मूल्य-सृजन का अवसर हाथ से निकल जाएगा। एमएसएमई क्षेत्र, जो देश के लगभग 30 प्रतिशत जीडीपी, 45 प्रतिशत निर्यात और 11 करोड़ से

नीतिगत चुनौतियों से जूझ रहा है। ऐसे में आगामी केंद्रीय बजट 2026-27 से यह क्षेत्र कुछ ठोस और व्यावहारिक सुधारों की अपेक्षा कर रहा है।

हाल के महीनों में वैश्विक व्यापार वातावरण अचानक अस्थिर हुआ है। अमेरिका द्वारा कुछ भारतीय उत्पादों पर लगाए गए दंडात्मक शुल्कों (टैरिफ) का सबसे अधिक असर एमएसएमई-प्रधान निर्यात क्षेत्रों पर पड़ा है। समुद्री उत्पाद, परिधान, कालीन, चमड़ा और आटो कंपोनेंट जैसे

आई है। इस गिरावट का सीधा असर नकदी प्रवाह और कर्ज चुकाने की क्षमता पर पड़ा है, जिससे एनपीए के बढ़ने का खतरा है। आवश्यकता है कि सरकार लक्षित ऋण गारंटी योजना, ब्याज अनुदान और ऋण वर्गीकरण मानदंडों में अस्थायी ढील जैसे उपाय करे। भारत में उद्यमिता के सामने सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है कर संरचना की जटिलता और असंतुलन। 'दोहरा कराधान' एक ऐसा मुद्दा है जिस पर पुनर्विचार की आवश्यकता है।

जागरण विशेष

बच्चों के वैज्ञानिक सोच को उड़ान देगी निकाय की 'स्पेस लैब'

खगोलशास्त्र, अंतरिक्ष विज्ञान, राकेट, सेटेलाइट की मिलेगी जानकारी

अजय कुमार शुक्ल • जागरण

कुशीनगर: नारायणी नदी के जीरो बंधा तट पर कैनसेट राकेट लांचिंग प्रतियोगिता ने छात्रों में अंतरिक्ष विज्ञान के जिस सोच को उड़ान दी थी, निकाय स्तरीय 'स्पेस लैब' अब उसे बुनियादी ठौर देगी। पडरौना नगरपालिका प्रदेश की ऐसी पहली निकाय बनने जा रही है, जिसने स्पेस लैब बनाने की कल्पना को मूर्त रूप दिया है। नगरीय निकाय द्वारा वित्तपोषित जूनियर हाईस्कूल में निर्माणाधीन स्पेस लैब में 15 लाख का खर्च आ रहा है, जिसकी व्यवस्था पालिका कर रही है।

देवरिया के सांसद शशांक मणि त्रिपाठी की पहल पर बीते अक्टूबर में इन-स्पेस की ओर कुशीनगर में नारायणी नदी के तट पर माडल रकेट्री और कैनसेट इंडिया स्टूडेंट प्रतियोगिता आयोजित की गई थी।

पडरौना स्थित जूनियर हाईस्कूल में प्रस्तावित स्पेस लैब के लिए मंगाए गए उपकरण • जागरण

देशभर के 600 से ज्यादा युवा विज्ञानियों ने अपने बनाए मिनी रकेट और सैटेलाइट (कैनसेट) लांच किए। ग्रामीण अंचल के छात्रों में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति जिज्ञासा को शांत किया, लेकिन सोच को नई उड़ान दे दी। यह प्रयोगशाला व्योमिका स्पेस, लखनऊ व इसरो एसएसी, अहमदाबाद के सहयोग से संचालित होगी जो ज्ञान-आधारित व्यावहारिक शिक्षा का केंद्र बनेगी। व्योमिका तकनीकी एवं शैक्षिक भागीदार होगा तो इसरो उसका मार्गदर्शन करेगा। लैब का उद्देश्य ग्रामीण छात्रों को अंतरिक्ष और वैज्ञानिक शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसमें खगोलशास्त्र, रोबोटिक्स, ड्रोन, इसरो, रकेट एवं सेटेलाइट माडल जैसे 100 बड़े एवं छोटे प्रोजेक्ट्स शामिल होंगे। खगोल विज्ञान, राकेट, उपग्रह एवं रोबोटिक्स के माध्यम से वैज्ञानिक जिज्ञासा और क्षमताओं को विकसित किया जाएगा। इसरो के सहयोग से प्रशिक्षक आएंगे जो स्थानीय शिक्षकों को दो माह तक प्रशिक्षण देंगे। टेलिस्कोप, स्टार गेजिंग नाइटस आदि उपकरण बच्चों में कौतूहल पैदा कर आगे बढ़ने को प्रेरित करेंगे। बुनियादी रोबोट किट, सेंसर-आधारित गतिविधियां और प्रोग्रामेबल कंट्रोल यूनिट रोमांच के साथ वैज्ञानिक सोच पैदा करेगा।

> नगर के बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए लैब की स्थापना हो रही है। इसमें बच्चे राकेट, छोटे सेटेलाइट-टेलिमेट्री सिमुलेशन, प्रकाश ऊर्जा प्रयोग, खगोलीय मानचित्रण आदि के बारे में अच्छे से जान सकेंगे। इस पहल से बच्चों की भारतीय अंतरिक्ष प्रोग्राम के बारे में जानकारी बढ़ेगी, एक नए भविष्य की ओर वे देख सकेंगे।
>
> -विनय जायसवाल,
> नगरपालिका अध्यक्ष पडरौना

प्रयोगशाला में खगोल अवलोकन इकाई बच्चों को उपकरणों के जरिये अंतरिक्ष की सैर करा कौतूहल को शांत करेगी। इसरो के प्रमुख रकेट/सैटेलाइट के माडल, मिशन-समग्र अभियान भी शामिल होगा। बुनियादी रोबोट किट, सेंसर-आधारित गतिविधियां और प्रोग्रामेबल कंट्रोल यूनिट भी होगी। बच्चों को ड्रोन का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे छात्रों में वैज्ञानिक सोच, अध्ययन-रुचि और करियर की संभावना भी बढ़ेगी। उच्च शिक्षा एवं तकनीकी सेवा की ओर जाने वाला मार्ग भी तैयार होगा।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

Dainik Jagaran Page No-6

अधूरे लक्ष्य

अमृत योजना में पंजाब पीछे, संसदीय समिति ने जताई चिंता

जलशोधन संयंत्रों के लक्ष्य अधूरे, 405 मिलियन लीटर प्रतिदिन क्षमता का अंतर, दूसरे चरण में तीन नए जलशोधन संयंत्र स्वीकृत किए थे, एक भी पूरा नहीं हुआ

रोहित कुमार • जागरण

चंडीगढ़: अटल कायाकल्प और शहरी परिवर्तन मिशन (अमृत) 2.0 योजना के तहत पंजाब में जल और अपशिष्ट जल प्रबंधन की धीमी प्रगति पर संसद की स्थायी समिति ने गहरी चिंता जताई है। आवास एवं शहरी कार्यों से संबंधित संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट में पंजाब को उन राज्यों में शामिल किया गया है, जहां लक्ष्य और उपलब्धि के बीच गंभीर अंतर है, विशेषकर जलशोधन संयंत्रों की स्थापना के मामले में।

रिपोर्ट के अनुसार, अमृत योजना के दूसरे चरण में पंजाब में तीन नए जलशोधन संयंत्र स्वीकृत किए गए थे, लेकिन इनमें एक भी परियोजना पूरी नहीं हो सकी है। इसकी तुलना में हरियाणा में तीन परियोजनाएं (9.5 मिलियन लीटर प्रतिदिन) स्वीकृत हुई थीं, जिनमें से एक शुरू कर दी गई है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि हरियाणा, गुजरात, मध्य प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, असम और बंगाल जैसे राज्यों ने नए जलशोधन संयंत्रों के संचालन के लक्ष्य पूरे कर लिए हैं, जबकि पंजाब, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्य अब भी पीछे हैं।

हिमाचल प्रदेश में दो परियोजनाएं (करीब दो मिलियन लीटर प्रतिदिन) स्वीकृत हुईं, लेकिन वहां भी कोई संयंत्र अब तक शुरू नहीं हो पाया है।

प्रतीकात्मक

जलशोधन क्षमता के स्तर पर बना हुआ है बड़ा अंतर

आंकड़ों के अनुसार, पंजाब ने अमृत योजना के पहले चरण में दो व दूसरे चरण में तीन यानि कुल पांच जलशोधन संयंत्रों की योजना बनाई थी। इनकी संयुक्त क्षमता 518.9 मिलियन लीटर प्रतिदिन थी। इनमें से केवल पहले चरण के ही दो संयंत्र शुरू हुए हैं। इनकी कुल क्षमता मात्र 113 मिलियन लीटर प्रतिदिन है। इस तरह राज्य में नई जलशोधन क्षमता के स्तर पर 405.9 मिलियन लीटर प्रतिदिन का बड़ा अंतर बना हुआ है। समिति ने शहरी क्षेत्रों में सीवरेज और उसके उपचार की क्षमता के बीच भी भारी असंतुलन बताया है। पंजाब में प्रतिदिन लगभग 2,111 मिलियन लीटर प्रतिदिन अपशिष्ट जल उत्पन्न होता है, जबकि कुल क्षमता करीब 1,628.5 मिलियन लीटर प्रतिदिन है। ये संयंत्र औसतन 80 प्रतिशत उपयोग स्तर पर काम कर रहे हैं, जिससे वर्तमान उपचार अंतर लगभग 482.5 मिलियन लीटर प्रतिदिन बना हुआ है।

परियोजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी नहीं लाई तो बढ़ेगा जल प्रदूषण

समिति ने चेतावनी दी है कि यदि परियोजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी नहीं लाई गई तो जल प्रदूषण बढ़ेगा, भूजल पर दबाव बढ़ेगा और शहरी स्वास्थ्य से जुड़े खतरे और गंभीर हो सकते हैं। समिति ने राज्यों से समयबद्ध रूप से परियोजनाएं पूरी करने और निगरानी व्यवस्था को सुदृढ़ करने की सिफारिश की है।

****

Dainik Jagaran Page No-3

भारत के लिए गर्व और आत्मविश्वास से भरा रहा 2025 : मोदी

पीएम ने 'मन की बात' में वर्षभर की उपलब्धियों और भविष्य की चुनौतियों पर की चर्चा

आपरेशन सिंदूर को बताया राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक, कहा– देशवासियों में समर्पण और एकजुटता की भावना प्रकट हुई

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के वर्ष 2025 के अंतिम संस्करण में देश की प्रमुख उपलब्धियों, राष्ट्रीय भावनाओं और आने वाली चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। 129वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने कहा कि बीता वर्ष भारत के लिए गर्व और आत्मविश्वास बढ़ाने वाला रहा है, जिसकी स्मृतियां देशवासियों को लंबे समय तक प्रेरणा देती रहेंगी। सुरक्षा, खेल, विज्ञान, संस्कृति और वैश्विक मंच पर भारत की सशक्त मौजूदगी स्पष्ट रूप से दिखाई दी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 2025 में भारत का प्रभाव हर क्षेत्र में उभरकर सामने आया। देश की आस्था, संस्कृति और विशिष्ट विरासत को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली।

उन्होंने 'आपरेशन सिंदूर' को राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक बताते हुए कहा कि दुनिया ने देख लिया है कि आज का भारत अपनी सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करता। इस अभियान के दौरान देश के हर कोने से 'मां भारती' के प्रति प्रेम, समर्पण और एकजुटता की भावना प्रकट हुई। उन्होंने विश्वास जताया कि वर्ष 2026 में भी देश नई उम्मीदों और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ेगा।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने का उल्लेख करते हुए कहा कि इस अवसर पर देशवासियों की सक्रिय भागीदारी राष्ट्रीय चेतना का सशक्त उदाहरण बनी। लोगों ने उत्साहपूर्वक अपने विचार साझा किए, जिससे देश की सामूहिक भावना और मजबूत हुई।

खेल जगत को लेकर प्रधानमंत्री ने 2025 को ऐतिहासिक वर्ष बताया। उन्होंने कहा कि पुरुष क्रिकेट टीम ने आइसीसी चैंपियंस ट्राफी जीतकर देश का मान बढ़ाया, जबकि महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार विश्व कप जीतकर इतिहास रचा। इसके अलावा महिला ब्लाइंड टी-20 विश्व कप में भारतीय बेटियों की जीत, एशिया कप टी-20 में शानदार प्रदर्शन और पैरा-एथलीटों द्वारा विश्व चैंपियनशिप में जीते गए पदकों ने देश को गौरवान्वित किया।

विज्ञान और अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की प्रगति का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि शुभांशु शुक्ला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुंचने वाले पहले भारतीय बने। उन्होंने कहा कि आज दुनिया भारत को उम्मीदों की नजर से देख रही है और इसकी सबसे बड़ी ताकत देश की युवा शक्ति है, जो नवाचार और तकनीकी विकास को नई ऊंचाइयों तक ले जा रही है।

प्रधानमंत्री ने विश्वभर में भारतीय संस्कृति और भाषाओं के प्रचार की सराहना करते हुए उत्तर और दक्षिण भारत को जोड़ने वाली भावना पर विशेष जोर दिया। उन्होंने फिजी में तमिल भाषा को नई पीढ़ी से जोड़ने के प्रयासों, वहां आयोजित 'तमिल दिवस' और दुबई में प्रवासी भारतीयों द्वारा शुरू की गई 'कन्नड़ पाठशाला' की प्रशंसा की।

मोदी ने कहा कि उनकी मातृभाषा हिंदी है, लेकिन तमिल भाषा के प्रति प्रेम ने उन्हें तमिल सीखने के लिए प्रेरित किया। वाराणसी में आयोजित चौथे 'काशी तमिल संगमम' और 'तमिल सीखें' अभियान को उन्होंने भाषा और संस्कृति को जोड़ने की मजबूत कड़ी बताया।

पर्यावरण और जैव विविधता पर बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में चीतों की संख्या बढ़कर 30 से अधिक हो गई है। वर्ष की शुरुआत में प्रयागराज महाकुंभ ने पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया, जबकि वर्ष के अंत में अयोध्या के राम मंदिर में ध्वजारोहण समारोह देश के लिए गर्व का क्षण बना।

डाक्टर की सलाह के बिना दवा न लें

एंटीबायोटिक दवाओं के बेअसर होने पर चिंता जताते हुए प्रधानमंत्री ने लोगों से अपील की कि वे डाक्टर की सलाह के बिना कोई भी दवा न लें। उन्होंने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि न्यूमोनिया और यूटीआइ से जुड़ी कई एंटीबायोटिक दवाएं अब असरहीन होती जा रही हैं। इसका प्रमुख कारण इन दवाओं का बिना सोचे-समझे इस्तेमाल है। प्रधानमंत्री ने कहा कि एंटीबायोटिक ऐसी दवाएं नहीं हैं, जिन्हें हर बीमारी में यू ही खा लिया जाए, क्योंकि इससे संक्रमण इन दवाओं के खिलाफ और मजबूत होता जा रहा है।

जम्मू-कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत पर हर भारतीय को गर्व

- मन की बात में कहा, प्रदेश की गौरवशाली पहचान है जेहनपोरा का प्राचीन बौद्ध परिसर
- ऐसी धरोहरों को संरक्षित करना बहुत जरूरी, इससे वर्तमान पीढ़ी अपने मूल से जुड़ती है

कश्मीर के बारामुला के जेहनपोरा में खोजे गए प्राचीन बौद्ध परिसर के अवशेष। फोटो पीएमओ

राज्य ब्यूरो, जागरण • जम्मू

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर हर भारतीय को गर्व है। उन्होंने कहा कि बारामुला के जेहनपोरा में एक प्राचीन बौद्ध परिसर की प्रेरणादायक खोज प्रदेश की गौरवशाली पहचान है। प्राचीन काल में कश्मीर में बौद्ध संस्कृति फलती फूलती रही है। ऐसी धरोहरों को समझना व उन्हें संरक्षित करना बहुत जरूरी है। इससे वर्तमान पीढ़ी अपने मूल से जुड़ती है और सांस्कृतिक गौरव को बल मिलता है। अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में मोदी ने कहा कि बारामुला जिले में मिले प्राचीन बौद्ध परिसर को भुला दिया गया था। जेहनपोरा क्षेत्र में लंबे समय से कुछ टीलों को प्राकृतिक संरचनाएं माना जाता रहा। दशकों तक इन टीलों के ऐतिहासिक महत्व पर किसी का ध्यान नहीं गया। लेकिन एक पुरातत्वविद् ने जब इन संरचनाओं का गहन अध्ययन किया तो सच सामने आने लगा व वैज्ञानिक जांच शुरू हो गई। प्रधानमंत्री ने कहा कि ड्रोन आधारित हवाई फोटोग्राफी व भूमि मानचित्रण जैसी आधुनिक तकनीकों से यह पता लग गया है कि ये टीले कोई प्राकृतिक नहीं थे। वे एक विशाल बौद्ध परिसर के अवशेष थे, जिन्हें बनाया गया था। उन्होंने बताया कि फ्रांस के एक संग्रहालय के अभिलेखागार में सुरक्षित एक पुरानी व धुंधली तस्वीर मिली, जिसमें बारामुला में स्थित तीन बौद्ध स्तूप दिखाई देते हैं।

Dainik Jagaran Page No-3

स्वीकारोक्ति

पाकिस्तान ने माना, नूर खान एयरबेस को भारत ने बनाया था निशाना

आठ महीने में संभवतः पहली बार है जब पाकिस्तान ने यह बात स्वीकारी, कहा, भारत की ओर से 80 ड्रोन भेजे गए जिसमें पाकिस्तान ने 79 रोके

लाहौर, प्रेट्र : पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री व विदेश मंत्री इशाक डार ने स्वीकार किया है कि भारत ने आपरेशन सिंदूर के तहत 10 मई को तड़के नूर खान एयरबेस पर बड़ा हमला बोला था। दोनों देशों के बीच चार दिनों तक चले सशस्त्र संघर्ष के आठ महीने बाद यह संभवतः पहली बार है, जब पाकिस्तान ने यह बात स्वीकारी है। डार ने यह भी दावा किया कि संघर्ष के दौरान इस्लामाबाद ने पाकिस्तान और भारत के बीच मध्यस्थता का अनुरोध नहीं किया था। उन्होंने दावा किया कि अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो और सऊदी अरब के विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान ने अपनी तरफ से नई दिल्ली से बात करने की इच्छा जताई थी।

पहलगाम हमले के बाद भारत ने सात मई को आपरेशन सिंदूर शुरू कर पाकिस्तान और गुलाम जम्मू कश्मीर में आतंकी ढांचे को निशाना बनाया था। इन हमलों के कारण दोनों देशों के बीच चार दिनों तक भीषण झड़पें हुईं। विदेश मंत्री डार ने दावा किया, 'उन्होंने (भारत ने) पाकिस्तान की ओर 36 घंटों में कम से कम 80 ड्रोन भेजे। हम उनमे से 79 ड्रोनों को रोकने में सफल रहे, और केवल एक ड्रोन ने सैन्य प्रतिष्ठान को नुकसान पहुंचाया। इस हमले में सैन्य कर्मी घायल भी हुए।' भारत ने 10 मई की सुबह नूर खान एयरबेस पर हमला बोला, जिसके बाद पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई की।

इशाक डार। फाइल

डार ने बताया, '10 मई को सुबह 8:17 बजे रूबियो ने उन्हें फोन किया और बताया कि भारत युद्धविराम के लिए तैयार है और पूछा कि क्या पाकिस्तान सहमत होगा।' बाद में सऊदी अरब के विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान ने उनसे संपर्क कर भारत से बात करने की अनुमति मांगी और बाद में युद्धविराम पर सहमति की पुष्टि की।' डार ने बिना कोई सबूत दिए पहले की तरह फिर से दावा किया कि पाकिस्तान ने सात भारतीय जेट विमानों को मार गिराया था।

उल्लेखनीय है पहलगाम हमले में 26 नागरिकों की हत्या के बाद अपनी कार्रवाई में 'भारत के सशस्त्र बलों ने पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों पर बेहद सटीक हमले किए'। चकलाल स्थित पाकिस्तानी वायुसेना बेस नूर खान को भारी नुकसान पहुंचा। सेटेलाइट तस्वीरों में रावलपिंडी स्थित नूर खान वायुसेना बेस, सरगोधा स्थित पीएएफ बेस मुशफ, भोलारी वायुसेना और जैकबबाद स्थित पीएएफ बेस शाहबाज सहित चार पाकिस्तानी वायुअड्डों को हुए नुकसान को दर्शाया गया है। पाकिस्तान और गुलाम जम्मू-कश्मीर में नौ आतंकी शिविरों को भी ध्वस्त कर दिया गया।

जरदारी को बंकर में छिपने को कहा गया था

एएनआइ के अनुसार भारत की त्वरित और सटीक जवाबी सैन्य कार्रवाई से पाकिस्तान का शीर्ष नेतृत्व भी बेहद खौफजदा था। सिंध प्रांत के लरकाना में अपनी पत्नी एवं पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक कार्यक्रम में राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने स्वीकार किया कि मई में तनाव बढ़ने के बाद नई दिल्ली के जवाबी हमलों के दौरान उनके सैन्य सचिव ने उन्हें तुरंत बंकर में छिपने की सलाह दी थी। जरदारी ने शेखी बघारते हुए कहा कि दरअसल, मैंने अपने सैन्य सचिव को चार दिन पहले ही बता दिया था कि युद्ध होने वाला है। लेकिन वे उस दिन मेरे पास आए और बोले, 'सर, चलिए बंकरों में चलते हैं।' मैंने कहा, 'अगर शहादत होनी है तो यहीं होगी। नेता बंकरों में नहीं मरते। वे युद्ध के मैदान में मरते हैं। वे बंकरों में बैठे-बैठे नहीं मरते।'

****

Dainik Jagaran Page No-3

Useful For Mains

प्रायश्चित की परतें

रितुप्रिया शर्मा

प्रायश्चित एक मानवीय भावना है, जो हमें जीवन में सही राह पर जाने की प्रेरणा प्रदान करती है। कई बार हमें यह भी लगता है कि अब वक्त निकल गया, तो अब इसके विषय में क्या ही किया जा सकता है। मगर प्रायश्चित का यह भाव किसी भी वक्त का मोहताज नहीं होता है। यह हमारे कल की गलती को आज का सबक बनाता है, जिससे आजीवन हम सीखते रहते हैं। जीवन में हम सभी कभी न कभी किसी न किसी प्रकार की गलती कर बैठते हैं। यह मानव होने के नाते स्वाभाविक ही है कि हमसे गलती होगी। हमारी यही गलतियां हमें बहुत कुछ सिखाती है। चाहे आर्थिक मामले हों, सामाजिक मामले या फिर कोई भावनात्मक, प्रायश्चित उस हर गलती के लिए एक जरूरी अध्यापक की तरह है, जो हमें सिखाता है कि एहसास के इस भाव से हम अपने आने वाले वक्त को कैसे सुधारें।

कई बार कुछ लोगों को ऐसा भी लग सकता है कि हमें अपनी भूलों के प्रति इतना ज्यादा गंभीर नहीं होना चाहिए, क्योंकि ये हमें शायद नकारात्मकता की ओर ले जाएं। मगर प्रायश्चित और पश्चाताप दोनों में काफी फर्क है। प्रायश्चित हमें अपनी गलतियों को सुधारने की दिशा में लेकर जाता है, जबकि पश्चाताप केवल एक अहसास है। प्रायश्चित एक महत्त्वपूर्ण चीज है, जो क्रियात्मक रूप में की जाती है। इसलिए पश्चाताप के बजाय प्रायश्चित की दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए, ताकि हम नकारात्मक न बनें और अपनी भूलों को सुधारने के प्रयास में लग जांए। हम सफल तभी होंगे, जब हमारा मन इस ओर बिल्कुल पवित्र, सहज और सरल होगा। ऐसे में यह भावना हमें किसी भी तरह की नकारात्मकता प्रदान नहीं कर सकती है।

हम सभी को याद होगा कि जब हम बचपन में परीक्षा की अच्छी तैयारी नहीं कर पाते थे और परीक्षा में कम अंक लाने पर हमारा मन अंदर ही अंदर दुखी होता था। साथ ही अपना मूल्यांकन करता रहता था। वह हमारा पश्चाताप होता था, लेकिन हम उस भूल को सुधारकर कड़ी मेहनत के साथ अगली बार परीक्षा में अच्छे अंक ला पाते थे, तो वह भी हमारा प्रायश्चित था। प्रायश्चित वह भाव है, जो हमें जीवन की सीख देता है और एक उत्कृष्ट जीवन जीने का तरीका सिखाता है, लेकिन इस भाव को इस रूप में भी नहीं लेना चाहिए कि हर छोटी से छोटी गलती को या किसी भूल को हम गम बना लें और जीवन भर उसे सीने से लगाकर घूमें। बल्कि इसे अपने अंदर सकारात्मक बदलाव का संदेश समझकर उसके मूल भाव को दृष्टिकोण में रख कर अपने सामर्थ्य के अनुसार सुधारात्मक प्रयास करना चाहिए। अगर हम गम गले से लगा कर रखेंगे तो पूरी जिंदगी असफलता, बेचारगी और कटुता को लेकर घूमेंगे।

इस तरह से पश्चाताप करना प्रायश्चित का मूल उद्देश्य बिल्कुल नहीं है। इसके मूल में यही बात छिपी है, जिसे हम समझाइश, शिक्षा या अनुभव का नाम दे सकते हैं। इस अनुभव के लिए छोटी उम्र से ही हमारे अभिभावक, शिक्षक और बड़े-बुजुर्ग हमें हिदायतें देते रहते थे। हिदायतें हमें प्रायश्चित का मूल्य प्रदान करती रही हैं, लेकिन इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं निकाला जाना चाहिए कि हर बार हर व्यक्ति को उसकी गलती को महसूस कराते रहना चाहिए, क्योंकि लगातार मिलने वाली हिदायतें, नसीहतें भी कभी-कभार बोझ लगने लगती है और फिर अपना अस्तित्व खोने लगती है। ऐसे में कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति अपना सर्वस्व ही खोने लगे। इसलिए कुछ बड़े और गंभीर विषयों को लेकर ही इस तरह की चीजों को प्रयोग में लाया जाना चाहिए, वरना व्यक्ति निराशावादी और यथास्थितिवादी भी बन सकता है।

दरअसल, अति हर चीज की बुरी होती है। यही विचार उस व्यक्ति पर भी लागू होता है जो पश्चाताप की अग्नि में जल रहा होता है। बिना किसी बड़ी बात के पश्चाताप करना गलत है, क्योंकि यह न केवल हमारे वक्त की बर्बादी है, बल्कि उपयोगिता विहीन विषय है। पश्चाताप का भाव रखना ठीक है, लेकिन उसे नियंत्रित रखना और प्रायश्चित का रूप देना चाहिए। पश्चाताप के साथ ही साथ हमें प्रायश्चित को महत्त्व देना चाहिए, ताकि हम अपने जीवन में उपयोगी और सुधारात्मक विषयों यथा करिअर, भावनात्मक भूलें, प्रतिष्ठा, जीवन मूल्यों आदि के लिए सार्थक प्रयास कर सकें। पश्चाताप के अति भावुक पक्ष में घुसकर हमें कुछ हासिल नहीं होगा, बल्कि हम खुद को जीवन भर कोसते रहेंगे और अपने समय की बर्बादी कर बैठेंगे। जरूरत इस बात की है कि हम अपने बड़ों और ऐसे लोगों, जो हमारे शुभचिंतक हैं, उनकी बातों को सकारात्मक रूप में लें। समाज में भी बहुत से लोग हमें कई बातें सिखाते हैं, जिनमें से कुछ अच्छी होती हैं और कुछ व्यर्थ की होती हैं। ऐसे में चुनाव करना सीखना चाहिए।

पश्चाताप एक पवित्र मानवीय भावना है और इसका एक क्रियात्मक पक्ष है। इसको गलती सुधारने और अपना जीवन पक्ष मजबूत बनाने के लिए उपयोगी बनाना चाहिए। अन्य व्यर्थ के मुद्दों को लेकर मन को दुखी नहीं करना चाहिए। समय बहुत ही कीमती है और अपने भावों को नियंत्रित करके रखना, यह बात सीखना भी उतना ही कीमती है। अगर हम अपने भावों को नियंत्रित कर पाए, तो देख सकते हैं कि एक इंसान होने के नाते हम कितनी तरक्की करते हैं। ये तरक्की ही हमारे सामाजिक, भावनात्मक और राष्ट्रीय पक्ष को मजबूत बनाएगी। इसलिए हम पश्चाताप का भाव रखें, लेकिन नियंत्रित तौर पर और प्रायश्चित पर ध्यान दें, ताकि हम इसके सही अर्थ को समझें और अपने आपको निरंतर निखारें।

दुनिया मेरे आगे

अति हर चीज की बुरी होती है। यही विचार उस व्यक्ति पर भी लागू होता है जो पश्चाताप की अग्नि में जल रहा होता है। बिना किसी बड़ी बात के पश्चाताप करना गलत है, क्योंकि यह न केवल हमारे वक्त की बर्बादी है, बल्कि उपयोगिता विहीन विषय है। पश्चाताप का भाव रखना ठीक है, लेकिन उसे नियंत्रित रखना और प्रायश्चित का रूप देना चाहिए।

डिजिटल संसार में सेहत के जोखिम

आज की पीढ़ी ने अपने बच्चों को पूरी दुनिया एक छोटी-सी स्क्रीन में सौंप दी है। मगर क्या वे इस दुनिया को समझ भी पा रहे हैं? इससे बच्चों के मस्तिष्क पर होने वाला असर अब एक जटिल समस्या बनता जा रहा है।

मनीष जैसल

यह मानव स्वभाव है कि हर पीढ़ी अपने बच्चों को खुद से अधिक सुविधाएं देने का प्रयास करती है। मगर ऐसा लगता है कि आज की हमारी पीढ़ी ने अपने बच्चों को पूरी दुनिया एक छोटी सी स्क्रीन में सौंप दी है। बच्चे अब पहाड़, समुद्र, युद्ध, महामारी और उत्सव सब कुछ अंगुलियों के एक स्पर्श से देख सकते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या वे इस दुनिया को समझ भी पा रहे हैं? या फिर सिर्फ देख रहे हैं, बिना याद रखे, बिना गहराई से महसूस किए? इसी प्रश्न के बीच दो नई आदतें उभरकर सामने आती हैं, 'बेड-राटिंग' और स्क्रालिंग संस्कृति, जो बच्चों की दृश्य स्मृति और मानसिक सक्रियता को प्रभावित कर रही हैं। 'बेड-राटिंग' का अर्थ है- लंबे समय तक बिस्तर पर ही पड़े रहना और मोबाइल चलाते रहना। पढ़ाई, मोबाइल, खाना और आराम सब कुछ एक ही जगह पर। यह आदत अकसर थकान या उदासी के नाम पर शुरू होती है, लेकिन धीरे-धीरे जीवनशैली बन जाती है। विशेषज्ञों के अनुसार, जब बिस्तर केवल सोने की जगह न रहकर जागने और स्क्रीन देखने का केंद्र बन जाता है, तो दिमाग को स्पष्ट संकेत नहीं मिलते। इसका सीधा असर नींद की गुणवत्ता और स्मृति निर्माण की प्रक्रिया पर पड़ता है।

बच्चों के मामले में यह स्थिति और भी संवेदनशील है। उनका दिमाग अभी विकसित हो रहा होता है। 'विजुअल प्रोसेसिंग' यानी दृश्य प्रसंस्करण यह क्षमता है, जिससे बच्चा आकार, रंग, दूरी, दिशा और गति को समझता है। दृश्य स्मृति वह शक्ति है, जिससे वह देखी हुई जानकारी को याद रखता है, चाहे वह शब्दों का रूप हो, किसी का चेहरा हो या रास्ते की पहचान। इन क्षमताओं का विकास केवल किताबों या स्क्रीन से नहीं होता, बल्कि वास्तविक दुनिया के अनुभवों से होता है, जैसे खुली जगह, खेल, दौड़ना, चेहरे पढ़ना, और वस्तुओं को छूकर समझना आदि। लगातार बिस्तर पर रहकर एक सीमित दूरी से स्क्रीन देखना दृश्य अनुभव को संकुचित कर देता है। ऐसे में बच्चा तेज, चमकीली और लगातार बदलती तस्वीरों का आदी हो जाता है। तंत्रिका तंत्र विज्ञान से जुड़े शोध बताते हैं कि इस तरह के एकरूप दृश्य अनुभव से मस्तिष्क के ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और दृश्य विशेष कौशल कमजोर हो सकता है। इसका असर आगे चलकर पढ़ने-लिखने और समझने की क्षमता पर भी दिखता है।

इसी सीमित दृश्य संसार में प्रवेश करती है 'डूम-स्क्रालिंग' यानी नकारात्मक, डराने वाली और संकट से भरी सूचनाओं को बिना रुके देखते जाना। महामारी, युद्ध, अपराध और आपदाओं की लगातार तस्वीरें बच्चों और किशोरों के मन में यह भावना बैठा देती हैं कि दुनिया असुरक्षित और भयावह है। अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के अनुसार, इस तरह की आदत चिंता, अवसाद और मानसिक थकान बढ़ाती है। चिंतित दिमाग न तो ध्यान केंद्रित कर पाता है और न ही नई जानकारी को ठीक से याद रख पाता है। इसके विपरीत हाल के वर्षों में 'ब्लूम-स्क्रालिंग' की अवधारणा सामने आई है, यानी सकारात्मक, प्रेरक और ज्ञानवर्धक सामग्री को चुनकर देखना। सही तरीके से अपनाया जाए, तो यह बच्चों में जिज्ञासा, आशावाद और रचनात्मक सोच को बढ़ा सकता है। लेकिन समस्या यह है कि अधिकांश डिजिटल मंच बच्चों को सोच-समझकर चुनने की बजाय लगातार स्क्राल करते रहने के लिए डिजाइन

किए गए हैं। एल्गोरिदम का उद्देश्य मानसिक विकास नहीं, बल्कि स्क्रीन-समय बढ़ाना होता है। 'बेड-राटिंग' और 'स्क्रालिंग' संस्कृति का समग्र प्रभाव बच्चों की ध्यान-क्षमता पर साफ दिखाई देता है। शिक्षक बताते हैं कि बच्चे लंबे समय तक किसी पाठ पर ध्यान नहीं लगा पाते।

> भारत में डिजिटल साधनों को शिक्षा और अवसर के रूप में देखा जाता है, जो सही भी है। मगर इस उत्साह में बच्चों के मानसिक और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की अनदेखी हो रही है। शहरी घरों में बच्चों का खेल मैदान मोबाइल बन चुका है। छोटे शहरों और कस्बों में भी यही प्रवृत्ति बढ़ रही है। परिणामस्वरूप बच्चों का दृश्य संसार सीमित और एकरूप होता जा रहा है। यह कहना जरूरी है कि तकनीक कोई समस्या नहीं, मगर उसका उपयोग संतुलित होना चाहिए। सवाल यह है कि क्या बच्चों को स्क्रीन के अलावा भी देखने, चलने, खेलने और सोचने के पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं?

इस पर हुए अध्ययन इस बात का संकेत देते हैं कि अत्यधिक स्क्रीन-उपयोग से क्रियाशील स्मृति और अनुक्रमिक विचारशीलता कमजोर हो सकती है। नींद इस पूरी समस्या का केंद्र है। वैज्ञानिक रूप से यह स्थापित तथ्य है कि स्मृति विशेषकर दृश्य नींद के दौरान स्मरण शक्ति में स्थायित्व हासिल करते हैं। जब बच्चे देर रात तक बिस्तर पर स्क्रीन देखते रहते हैं, तो नींद की अवधि ही नहीं, उसकी गुणवत्ता भी घटती है। स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी मेलाटोनिन हार्मोन को दबाती है, जिससे दिमाग को आराम का संकेत नहीं मिल पाता। नतीजतन अगला दिन थकान, चिड़चिड़ेपन और ध्यान-भंग के साथ शुरू होता है।

एक समय था, जब परिवार के बुजुर्ग बच्चों से सहज रूप से पूछ लेते थे- 'कोई पहाड़ा सुनाओ।' यह केवल गणित का अभ्यास नहीं था, बल्कि बच्चे की मानसिक सक्रियता को परखने का तरीका था। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें, तो पहाड़ा याद करना क्रियाशील स्मृति, अनुक्रमित प्रसंस्करण और दृश्य श्रवण समन्वय तीनों को सक्रिय करता है। बच्चे को अंकों की दृश्य छवि बनानी होती है, क्रम याद रखना होता है और बिना रुके सही उत्तर देना होता है। तंत्रिका तंत्र विज्ञान बताता है कि ऐसी गतिविधियां मस्तिष्क के उन खास हिस्सों को सक्रिय करती हैं, जो ध्यान और स्मृति के लिए जिम्मेदार हैं। आज जब उत्तर एक क्लिक में स्क्रीन पर मिल जाता है, तो दिमाग की वह कसरत नहीं हो पाती है। दुनिया के कई देशों ने इस बदलती स्थिति को गंभीरता से लिया है। फ्रांस, डेनमार्क और नार्वे जैसे देशों में बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर सख्त दिशा-निर्देश लागू किए गए हैं। आस्ट्रेलिया में तो सोलह वर्ष से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई है। यूरोप के कई स्कूलों में 'डिजिटल वेल बीइंग' यानी डिजिटल तकनीक के संतुलित उपयोग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है, ताकि बच्चे तकनीक का उपयोग करना सीखें, उसके गुलाम न बनें।

भारत में तस्वीर थोड़ी जटिल है। यहां डिजिटल साधनों को शिक्षा और अवसर के रूप में देखा जाता है, जो सही भी है। मगर इस उत्साह में बच्चों के मानसिक और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की अनदेखी हो रही है। शहरी घरों में बच्चों का खेल मैदान मोबाइल बन चुका है। छोटे शहरों और कस्बों में भी यही प्रवृत्ति बढ़ रही है। परिणामस्वरूप बच्चों का दृश्य संसार सीमित और एकरूप होता जा रहा है। यह कहना जरूरी है कि समस्या तकनीक नहीं, उसका असंतुलित उपयोग है। स्क्रीन अपने आप में न तो शत्रु है और न समाधान, यह एक माध्यम है। सवाल यह है कि क्या बच्चों को स्क्रीन के अलावा भी देखने, चलने, खेलने और सोचने के पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं? यदि नहीं, तो उनकी दृश्य स्मृति और समझ अधूरी ही रह जाएगी। इस मामले में माता-पिता की भूमिका निर्णायक है। घर में यह स्पष्ट होना चाहिए कि बिस्तर केवल सोने की जगह है, पूरे दिन की गतिविधियों का केंद्र नहीं। स्क्रीन-मुक्त समय और स्थान तय करना, बच्चों के साथ बैठकर सामग्री चुनना तथा उनके डिजिटल अनुभव पर संवाद करना आज की जरूरत है।

स्कूलों को भी अपनी भूमिका पर पुनर्विचार करना होगा। डिजिटल साक्षरता का अर्थ केवल तकनीक का इस्तेमाल नहीं, बल्कि यह समझाना भी है कि इसमें परोसी जा रही सामग्री का बच्चों के दिमाग पर कैसा असर हो रहा है। बच्चों को यह सिखाना जरूरी है कि नकारात्मक सूचनाओं और सामग्री से मानसिक दूरी कैसे बनाई जाए और सकारात्मक जानकारी को कैसे चुना जाए। बच्चों का मानसिक और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य केवल परिवार की नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी है। उम्र-आधारित दिशा-निर्देश, डिजिटल मंच की जवाबदेही और सार्वजनिक जागरूकता, तीनों पर एक साथ काम करने की जरूरत है।

आपरेशन सिंदूर : पाक के उप प्रधानमंत्री डार ने कहा

नूर खान सैन्य अड्डे को हुआ था भारी नुकसान

बंकर में छिपने की सलाह मिली थी : जरदारी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 28 दिसंबर।

आखिरकार पाकिस्तान ने सच कबूल लिया है कि आपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने 10 मई की सुबह नूर खान में वायुसेना अड्डे पर हमला किया था। रविवार को जहां पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया कि आपरेशन सिंदूर में भारत के हमले में नूर खान एअरबेस को भारी नुकसान हुआ था। वहीं पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने खुलासा किया कि उन्हें इस साल मई में भारत की सैन्य कार्रवाई 'आपरेशन सिंदूर' के दौरान बंकर में छिपने की सलाह दी गई थी।

पाकिस्तान का यह आधिकारिक कबूलनामा दोनों देशों के बीच चार दिनों तक चले सशस्त्र संघर्ष के आठ महीने बाद संभवतः पहली बार है। अब तक पाकिस्तान आपरेशन सिंदूर के दौरान किसी भी नुकसान को नकराता रहा है।

डार ने प्रेस वार्ता में कहा कि भारत ने 36 घंटे में 80 ड्रोन हमले किए थे। उन्होंने पाकिस्तानी सैनिकों के घायल होने की बात भी बताई। डार ने कहा, 'भारत द्वारा भेजे गए 80 में से 79 ड्रोन को रोक दिया गया था। इसके बाद भारत ने 10 मई की सुबह नूर खान वायुसेना अड्डे पर हमला करने की गलती की, जिससे पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई की। जरदारी ने यह खुलासा अपनी पत्नी और पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की 18वीं पुण्यतिथि के मौके पर सिंध प्रांत के लरकाना में एक कार्यक्रम में किया। 27 दिसंबर 2007 को रावलपिंडी में बेनजीर भुट्टो की हत्या कर दी गई थी।

इशाक डार

आसिफ अली जरदारी

डार ने यह भी कहा कि इस्लामाबाद ने मई के संघर्ष के दौरान पाकिस्तान और भारत के बीच मध्यस्थता का अनुरोध नहीं किया था, लेकिन दावा किया कि अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो और सऊदी विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान ने नई दिल्ली से बात करने की इच्छा व्यक्त की थी। डार ने कहा कि 10 मई को अमेरिकी विदेश मंत्री रूबियो ने उन्हें सुबह करीब 8.17 बजे फोन किया, जिसमें उन्होंने बताया कि भारत युद्धविराम के लिए तैयार है और पूछा कि क्या पाकिस्तान सहमत होगा।

डार ने कहा, 'मैंने कहा कि हम कभी युद्ध नहीं चाहते

बाकी पेज 8 पर

धीमा जहर बनता फास्ट फूड

देवेंद्रराज सुथार

उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले में 11वीं कक्षा में पढ़ने वाली 16 साल की एक छात्रा की मौत फास्ट फूड के अत्यधिक सेवन के कारण हो जाना समाज के लिए चेतावनी की तरह है। छात्रा लगभग रोजाना चाऊमीन, बर्गर, पिज्जा जैसे जंक फूड खाया करती थी। उम्र के इस दौर में स्वाद की पसंद और दोस्तों के बीच प्रचलन अक्सर बच्चों को असंतुलित भोजन की ओर ले जाता है, लेकिन जब यह आदत रोजमर्रा का हिस्सा बन जाए, तो इसके परिणाम बेहद खतरनाक हो सकते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन पहले ही चेतावनी दे चुका है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन का लगातार सेवन पाचन तंत्र को भीतर से खोखला कर देता है। इनमें मौजूद अत्यधिक तेल, नमक, रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट और रासायनिक तत्व आंतों की प्राकृतिक सुरक्षा को कमजोर करते हैं। भारत में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के आंकड़े बताते हैं कि 15 से 19 वर्ष की आयु के किशोरों में अधिक वजन और मोटापे की दर पिछले दस

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अल्ट्रा-प्रोसेस्ड भोजन का लगातार सेवन पाचन तंत्र को भीतर से खोखला कर देता है

वर्षों में लगभग दोगुनी हो चुकी है। यह मोटापा केवल शरीर के बाहरी आकार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अंदरूनी अंगों पर पड़ने वाले दबाव का संकेत होता है, जो आगे चलकर गंभीर बीमारियों का रूप ले सकता है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अध्ययनों के अनुसार लंबे समय तक असंतुलित भोजन करने से आंतों की परत में सूजन आती है, संक्रमण का खतरा बढ़ता है और गंभीर मामलों में आंतों में छेद तक हो सकते हैं। ऐसे नुकसान धीरे-धीरे होते हैं, इसलिए अक्सर तब तक नजर नहीं आते, जब तक स्थिति जानलेवा न बन जाए। राष्ट्रीय पोषण संस्थान के शोध बताते हैं कि फास्ट फूड अब महानगरों की सीमा तोड़कर छोटे शहरों और कस्बों तक पहुंच चुका है। सस्ती कीमत, तीखा स्वाद और आक्रामक विज्ञापन बच्चों को घर के सादे, संतुलित भोजन से दूर कर रहे हैं। माता-पिता की व्यस्तता और संवाद की कमी इस समस्या को और विकराल कर देती है।

चिंता की बात यह है कि भारत में पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियों के मामलों में युवाओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इंडियन जर्नल आफ गैस्ट्रोएंटरोलाजी में प्रकाशित अध्ययनों के अनुसार, गैस्ट्रिक और आंतों से जुड़ी समस्याओं के नए मरीजों में बड़ी हिस्सेदारी 25 वर्ष से कम उम्र के लोगों की है। बीमारियां अब उम्र का इंतजार नहीं कर रहीं। फास्ट फूड पूरी तरह त्याज्य नहीं, लेकिन उसे रोजमर्रा की आदत बना लेना आत्मघाती है। अगर आज भी हम इसे एक अपवाद मानकर टाल देंगे, तो ऐसे हादसे बढ़ते जाएंगे। सवाल अब यह नहीं है कि बच्चों को क्या अच्छा लगता है, बल्कि यह है कि उनके लिए क्या सुरक्षित है। समाज, परिवार और नीति तीनों को मिलकर इस सवाल का जवाब देना होगा, वरना कीमत आने वाली पीढ़ियां चुकाएंगी।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

Dainik Jagaran Page No-8

स्वास्थ्य में नवाचार

स्वास्थ्य सेवाओं में अधिक से अधिक तकनीक के उपयोग का लाभ अंततः मरीजों को ही मिलता है। झारखंड सरकार भी इसे अच्छी तरह समझती है। इसलिए इस दिशा में लगातार प्रयास भी हो रहे हैं। स्वास्थ्य सेवाओं में मोबाइल एप के उपयोग की बात हो या पोर्टल के माध्यम से योजनाओं की पहुंच लाभुकों तक सुनिश्चित कराने की, स्वास्थ्य विभाग इस दिशा में लगातार पहल कर रहा है। 108 एंबुलेंस सेवा तथा ममता वाहन के लिए मोबाइल एप के माध्यम से बुकिंग इसी पहल का हिस्सा है, जिसके लिए साफ्टवेयर तैयार करने एवं टेंडर प्रक्रिया पर मंथन शुरू हो गया है। हालांकि, मरीजों के हित को केंद्र में रखकर किया जा रहा यह प्रयास तभी सार्थक होगा, जब साफ्टवेयर फूलप्रूफ और नियमित तौर पर अपडेट हो। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि अभी भी झारखंड के कई सुदूर क्षेत्रों में मोबाइल कनेक्टिविटी की समस्या है। ऐसे में मोबाइल एप से बुकिंग के अलावा पूर्व की तरह 108 डायल जैसी आफलाइन व्यवस्था के साथ-साथ अन्य विकल्पों पर भी फोकस करना होगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि इसे केंद्र में रखकर स्वास्थ्य विभाग ऐसा सिस्टम तैयार करेगा, जिससे मरीजों, घायलों तथा गर्भवती महिलाओं को ससमय सुलभ तरीके से इन योजनाओं का लाभ मिल सके। तकनीक तभी प्रभावी होती है, जब उसे जमीनी स्तर पर काम करने वाले लोग सहजता से अपना सकें। डाटा सुरक्षा, मरीजों की गोपनीयता का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

एप से बुकिंग के साथ-साथ पूर्व की तरह 108 डायल जैसी आफलाइन व्यवस्था के साथ-साथ अन्य विकल्पों पर भी फोकस करना होगा

Dainik Jagaran Page No-8

सामने आनी चाहिए नेहरूजी की चिट्ठियां

पीयूष पांडे

आज जब कई राजनीतिक बहस के केंद्र में नेहरू आने लगे हैं, तब उनके पत्रों के सार्वजनिक होने की जरूरत बढ़ गई है

देश के पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के निजी पत्रों और दस्तावेजों पर किसका अधिकार है? राष्ट्र का या नेहरू-गांधी परिवार का? यह बहस एक बार फिर गरमा गई है। हाल में जब भाजपा सांसद संबित पात्रा ने संसद में कहा कि नेहरू से जुड़े कागज प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय से गायब हैं तो केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने बताया कि देश के पहले प्रधानमंत्री से संबंधित कोई दस्तावेज प्रधानमंत्री संग्रहालय से लापता नहीं है। केंद्रीय मंत्री ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा कि नेहरू जी के 'पत्र लापता नहीं हैं' कहने का अर्थ है कि वे सोनिया गांधी के पास हैं, क्योंकि लापता वह चीज होती है, जिसके विषय में कुछ पता ही नहीं हो। सवाल यह है कि क्या सरकार ने इन पत्रों पर राजनीति की या नेहरू-गांधी परिवार इन खतों को देश के सामने नहीं आने देना चाहता? इससे भी बड़ा सवाल यह है कि क्या नेहरू-गांधी परिवार के पास मौजूद पत्र अब अस्तित्व में हैं या नहीं?

इसमें कोई शक नहीं है कि जवाहरलाल नेहरू की चिट्ठियां समकालीन राजनीति और समाज का जीवंत दस्तावेज हैं। उनके पत्र आज भी जीवंत हैं, क्योंकि वे भारत की आधुनिक चुनौतियों जैसे सांप्रदायिकता, राष्ट्रवाद, भारत की वैश्विक भूमिका और सामाजिक न्याय के सवाल को संबोधित करते हैं। इसके अलावा इन चिट्ठियों में उनके निजी जीवन की झलक भी है। उनमें से अधिकांश वर्षों तक प्रधानमंत्री संग्रहालय में रखे हुए थे, लेकिन मनमोहन सरकार में अचानक इन चिट्ठियों की मौजूदगी का पता बदल गया। इस साल अप्रैल में प्रधानमंत्री म्यूजियम की तरफ से नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को एक खत लिखा गया। उसमें कहा गया कि राहुल गांधी के परिवार के पास जवाहरलाल नेहरू से जुड़े जो दस्तावेज हैं, वे वापस कर दिए जाएं। प्रधानमंत्री म्यूजियम और लाइब्रेरी सोसायटी के सदस्य रिजवान कादरी ने दावा किया था कि 2008 में यूपीए कार्यकाल में 51 बक्सों में भरकर नेहरू के निजी खत सोनिया गांधी के पास पहुंचाए गए थे। उनका दावा है कि उन्होंने सितंबर 2024 में भी सोनिया गांधी को खत लौटाने के लिए पत्र लिखा था, लेकिन उनसे कोई जवाब नहीं मिलने पर उन्होंने राहुल गांधी को पत्र लिखा। रिजवान कादरी ने जिन 51 बक्सों की बात की थी, उनमें नेहरू के वे पत्र रखे हुए हैं, जो उन्होंने एडविना माउंटबेटन, अल्बर्ट आइंस्टीन, जयप्रकाश नारायण, पद्मजा नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली, बाबू जगजीवन राम और गोविंद बल्लभ पंत जैसी कई नामी शख्सियतों को लिखे थे।

राजनीति का जीवंत दस्तावेज हैं नेहरूजी के पत्र। फाइल

हालांकि ऐसा नहीं है कि इन पत्रों को सार्वजनिक करने की मांग पहली बार की गई है। 2014 में भी ऐसी मांग उठी थी। उस वक्त यूनिवर्सिटी आफ नार्थ कोलंबिया के इतिहासकार सुसान डेनबे ने नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय से 1947 के बाद के नेहरू के पत्र देखने की इच्छा जताई थी, लेकिन उन्हें मंजूरी नहीं मिल पाई। इन खतों को लेकर नेहरू-गांधी परिवार के करीबी ये तर्क देते हैं कि प्रधानमंत्री संग्रहालय ने ऐसे खत परिवार को तोहफे में दे दिए थे और तोहफा वापस कैसे लिया जा सकता है, लेकिन क्या देश के पहले प्रधानमंत्री का पत्र व्यवहार परिवार की जागीर हो सकता है? अच्छी बात यह है कि अब यह बहस गर्म हो रही है और इस बारे में नेहरू-गांधी परिवार को जवाब देना होगा। नेहरू के कई खत हंगामा मचा सकते हैं। ऐसे कई किस्से हैं, जो इन पत्रों के सनसनीखेज होने का इशारा करते हैं। उदाहरण के लिए जयप्रकाश नारायण को एक बार अपने घर की सफाई में कुछ खत मिले थे, जो उन्होंने इंदिरा गांधी को लौटा दिए थे। एक खत में कमला नेहरू प्रभावती (जेपी की पत्नी) को लिखती हैं-'तुम भाग्यशाली हो कि तुमसे वह (जेपी) बराबरी से बात करते हैं...।' एक अन्य खत में कमला नेहरू लिखती हैं-मैंने एक हाउस वाइफ की तरह 35 साल बिताकर बहुत बड़ी गलती की। अगर यह समय मैं भगवान को खोजने में लगाती तो शायद वे भी मिल जाते। जेपी नेहरू को भाई कहते थे। उन्हें लगा कि ऐसे खत बेवजह हंगामा मचा सकते हैं। लिहाजा साथियों के फोटोकापी कराने की मांग को भी अनसुना कर दिया। नेहरू और एडविना माउंटबेटन के बीच का पत्राचार भी कई शोधार्थी देखना चाहते हैं। एडविना की बेटी पामेला माउंटबेटन ने अपनी किताब 'इंडिया रिमेम्बर्डः ए पर्सनल अकाउंट आफ माउंटबेटंस ड्यूरिंग द ट्रांसफर आफ पावर' में लिखा है कि नेहरू और एडविना 'गहरे प्रेम' में थे और एक-दूसरे का सम्मान करते थे, लेकिन सच यह भी है कि इस रिश्ते को लेकर आज भी अलग-अलग तरह की अटकलें हैं।

जवाहरलाल नेहरू के निजी पत्रों में कई कहानियां बंद हैं, लेकिन अब वे सोनिया गांधी के घर की किसी तिजोरी में बंद हैं। आज के दौर में जब कई राजनीतिक बहस के केंद्र में जवाहरलाल नेहरू अपने आप आ खड़े होते हैं, तब उनके पत्रों के सार्वजनिक होने की जरूरत पहले से ज्यादा है। इन पत्रों को प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय का हिस्सा बनना चाहिए। ध्यान रहे कि प्रियंका गांधी बाड्रा संसद में यह कहने से नहीं हिचकतीं कि भाजपा चाहे तो नेहरूजी पर संसद में बहस करा ले। ऐसी किसी बहस से पहले उन्हें नेहरू के खत सार्वजनिक करने चाहिए, ताकि उन पर कभी भी, कहीं भी होने वाली बहस सार्थक और सत्य की रोशनी में हो।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
response@jagran.com

Dainik Jagaran Page No-8

सुगमता का पर्याय बनें सुधार

आदित्य सिन्हा

कारोबारी सुगमता को केवल सरकारी प्रक्रिया में सुधार नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत के रूप में देखा जाना चाहिए

आर्थिक विकास कई बिंदुओं पर निर्भर करता है। ऐसा ही एक प्रमुख बिंदु है कारोबारी सुगमता अर्थात लोगों के लिए कोई व्यवसाय शुरू करना, उसे चलाना और उसका विस्तार करना कितना आसान है। जब नियम सरल होते हैं और निर्णय पूर्वानुमानित होते हैं तो कंपनियां उत्पादन, भर्ती और निवेश पर ध्यान केंद्रित करती हैं। जब प्रक्रियाएं धीमी या अनिश्चित होती हैं तो पूरी ऊर्जा इसी में झोंक दी जाती है कि अनुपालन, मुकदमेबाजी के बोझ और जोखिमों से कैसे बचा जाए। कारोबारी सुगमता में बाधा आर्थिकी के विकास में बड़ी बाधक बनती है। भारत जैसे देश में तो यह और महत्वपूर्ण हैं, जहां नियामकीय जटिलताएं, कई अनुमतियों की आवश्यकता और अनिश्चित प्रवर्तन उद्यमों के लिए एक छिपे हुए टैक्स की तरह काम करते हैं। इसका परिणाम यह निकलता है कि न केवल आर्थिक गतिविधियों का दायरा सिकुड़ता है, बल्कि जो परियोजनाएं अस्तित्व में भी आना चाहें तो वे देरी के चलते लागत में बढ़ोतरी की शिकार हो जाती हैं।

वर्ष 2014 में केंद्र की सत्ता में हुए परिवर्तन के साथ ही नई सरकार ने इन परेशानियों को समझते हुए कारोबारी सुगमता को बेहतर बनाने के सार्थक प्रयास शुरू किए। सरकार ने व्यवसाय शुरू करने, चलाने और आवश्यकता पड़ने पर उनके समापन को आसान बनाने के लिए सुधारों की एक समग्रतापूर्ण नीति अपनाई है। इस क्रम में कानूनों को सरल बनाया गया है। प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण हुआ है। कई गतिविधियों को आपराधिक दायरे से मुक्त किया गया है, जिससे कुछ प्रक्रियागत कामकाज गैर-आपराधिक हुए हैं। केवल आवश्यक अनुमतियों के लिए ही प्रतीक्षा करनी पड़ती है और उन्हें प्राप्त करने की प्रक्रिया भी आसान बनाई गई है। गुणवत्ता नियंत्रण से जुड़े नियम भी इतने तार्किक हुए हैं कि उनके चलते लागत पर बोझ न बढ़े। बीते दिनों चार नई श्रम संहिताओं ने सुधारों के इस सिलसिले को नया आयाम दिया है, जिसमें श्रमिकों से लेकर उद्यमियों के हितों को पूरा ध्यान रखा गया है। इन सुधारों को एक लक्षित एमएसएमई एजेंडे के माध्यम से और मजबूती प्रदान की गई है। वृद्धि के लिए आकार या दायरे की सीमाओं को संशोधित किया है। उद्यमों को औपचारिक क्षेत्र के अंतर्गत आने के लिए प्रोत्साहन मिला है। ऋण से लेकर सरकारी खरीद तक की पहुंच बेहतर बनाई गई है। अंतिम कड़ी को जोड़ने पर भी जोर दिया गया है।

उद्यमों का सबसे अधिक वास्ता जिला प्रशासन से पड़ता है। इसे देखते हुए जिला व्यापार सुधार कार्ययोजना (डी-बीआरएपी), 2025 एक शानदार पहल है। इसमें डिजिटलीकरण, समयबद्ध मंजूरियां, जोखिम-आधारित निरीक्षण और निवेशक सुविधा को जिला स्तरीय शासन में समाहित किया गया है, ताकि कारोबार सुगमता केवल नीतिगत आख्यान तक ही सीमित न रहे, बल्कि दैनिक कामकाज में भी महसूस की जा सके। चर्चा है कि सरकार एक जन विश्वास सिद्धांत पर भी काम कर रही है। यह नियामकीय दृष्टिकोण में गहन बदलाव पर केंद्रित है। इसके मूल में यह है कि विश्वास ही सामान्य दस्तूर होना चाहिए और नियंत्रण अपवाद। इस क्रम में राष्ट्रीय सुरक्षा, सार्वजनिक सुरक्षा, मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण को छोड़कर अन्य तमाम आर्थिक गतिविधियों के लिए पूर्व अनुमति की आवश्यकता नहीं होगी। लाइसेंस स्थायी आत्म-पंजीकरण में बदल जाएंगे, निरीक्षण जोखिम-आधारित और अमूमन तृतीय पक्ष द्वारा होंगे और आपराधिक दंड की जगह भी अनुपातिक सामान्य जुर्माना लगाया जाएगा। इसमें राज्य की भूमिका 'आपको किसने अनुमति दी?' के बजाय 'आप आगे बढ़ सकते हैं' को मान्यता देने की हो जाएगी। इसमें कुछ असामान्य परिस्थितियों में ही कड़े विशेष प्रविधान लागू होंगे। यह भारत के नियामकीय दृष्टिकोण में एक बड़े परिवर्तन का संकेत है, जो लाइसेंस राज के उलट है। लाइसेंस राज में अमल से पहले अनुमति की आवश्यकता होती है और उसमें अनुपालन भी स्पष्टता के बजाय डर के कारण अधिक होता है।

नए वर्ष में भारत को अगला कदम यह उठाना चाहिए कि कारोबारी सुगमता सुधार एजेंडे के तहत शासकीय सिद्धांत में परिवर्तित हो, जो जन विश्वास सिद्धांत में निहित हो और संघीय प्रणाली में आंतरिक रूप से समाहित हो। यह भी अनदेखा न किया जाए कि केंद्र सरकार सुधारों की व्यापक दिशा तो निर्धारित कर सकती है, लेकिन किसी भी सुधार की दशा मुख्य रूप से राज्यों, जिला और स्थानीय निकायों द्वारा निर्धारित होती है। इसलिए 2026 में राज्यों को अपने स्तर पर भी प्रयास करने ही होंगे। उन्हें अनुमतियों के दायरे को घटाने से लेकर नियमों का मानकीकरण भी करना होगा। राज्यों को जोखिम-आधारित निरीक्षण, आत्मप्रमाणन और तृतीय पक्ष द्वारा आडिट को उस स्तर पर समाहित करना चाहिए, जहां अनुपालन डाटा मजबूत है। गुणवत्ता और सुरक्षा नियमों को घरेलू औद्योगिक तत्परता के साथ सुसंगत बनाया जाना भी जरूरी है।

भारत को कारोबारी सुगमता को केवल सरकारी प्रक्रिया में सुधार नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण आर्थिक ताकत के रूप में देखना चाहिए। आज टैरिफ और ट्रेड वार के अलावा भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं में कंपनियों के लिए बाजार के दायरे के साथ-साथ नियमों में स्पष्टता और परिस्थितियों के अनुरूप ढलने की क्षमता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। जो देश तत्परता के साथ नियमों में परिवर्तन करने, कानूनों को विश्वसनीय तरीके से लागू करने और अनावश्यक अड़चनों को दूर रखने में सक्षम होते हैं, वे स्वाभाविक रूप से निवेश को आकर्षित करने में सफल होते हैं। भारत के लिए इसका स्पष्ट अर्थ है कि केंद्र और राज्य सरकारें निवेश और रोजगार को ध्यान में रखकर काम करें। अनावश्यक और बोझिल नियमों को निरंतर रूप से घटाएं और 'जन विश्वास सिद्धांत' को हर स्तर पर नियम बनाने का आधार बनाया जाए। भारत की प्रतिस्पर्धा क्षमताएं केवल बड़े सुधारों की घोषणाओं से ही नहीं, बल्कि इस पहलू से तय होंगी कि उसका नियामकीय तंत्र उद्यमों को वैश्विक अनिश्चितताओं की तुलना में कितनी तेजी से आगे बढ़ाने में सहायक बनता है।

(लेखक लोक-नीति विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

अवधेश राजपूत

प्रश्न:
भारत सरकार एवं बिहार सरकार के प्रयासों से महिलाओं की स्थिति में आए बदलावों की चर्चा कीजिए।

भूमिका
- बीते एक दशक में भारत एवं बिहार में महिला सशक्तिकरण "कल्याण" से आगे बढ़कर "सशक्त भागीदारी" के चरण में प्रवेश कर चुका है।
- सरकारी नीतियों, कानूनी सुधारों एवं योजनाओं के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

1. भारत सरकार के प्रयास एवं उनके प्रभाव
(क) शिक्षा एवं मानव पूंजी
- **बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ** → बालिका नामांकन, लिंगानुपात में सुधार।
- **समग्र शिक्षा अभियान** → माध्यमिक स्तर पर ड्रॉपआउट दर में कमी।

परिणाम:
- शिक्षित महिलाएँ अब प्रशासन, खेल, विज्ञान व राजनीति में आगे।

(ख) आर्थिक सशक्तिकरण
- **मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया, PM SVANidhi** → महिला उद्यमिता को बढ़ावा।
- **SHG–Bank Linkage (NRLM)** → ग्रामीण महिलाओं की आय में वृद्धि।

परिणाम:
- महिलाएँ नौकरी खोजने वाली नहीं, रोजगार देने वाली बनीं।

(ग) राजनीतिक एवं संवैधानिक पहल
- **नारी शक्ति वंदन अधिनियम (33% आरक्षण)**।
- पंचायतों में पहले से आरक्षण।

परिणाम:
- निर्णय-निर्माण में महिलाओं की आवाज मजबूत।

(घ) सुरक्षा एवं सम्मान
- **मिशन शक्ति, निर्भया फंड, POSH Act**।

परिणाम:
- सार्वजनिक व कार्यस्थल पर सुरक्षा की भावना बढ़ी।

2. बिहार सरकार के प्रयास एवं बदलाव

(क) शिक्षा में क्रांतिकारी पहल
- **साइकिल योजना, पोशाक योजना, छात्रवृत्ति**।

परिणाम:
- बालिका स्कूल उपस्थिति बढ़ी, कम उम्र में विवाह में कमी।

(ख) आर्थिक स्वावलंबन
- **जीविका परियोजना** → लाखों महिला स्वयं सहायता समूह।
- बैंकिंग, कृषि, डेयरी, सूक्ष्म उद्योगों में भागीदारी।

परिणाम:
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की निर्णायक भूमिका।

(ग) राजनीतिक भागीदारी
- **पंचायती राज में 50% आरक्षण**।

परिणाम:
- बिहार महिला नेतृत्व का राष्ट्रीय मॉडल बना।

(घ) रोजगार एवं प्रशासन
- **सरकारी नौकरियों में 35% आरक्षण (बिहार)**।

परिणाम:
- पुलिस, शिक्षक, प्रशासनिक सेवाओं में महिलाओं की संख्या बढ़ी।

(ङ) सामाजिक सुधार
- **बाल विवाह एवं दहेज निषेध अभियान**।

परिणाम:
- सामाजिक चेतना एवं महिला आत्मसम्मान में वृद्धि।

3. समग्र प्रभाव (भारत + बिहार)
- खेल, प्रशासन, रक्षा एवं सामाजिक क्षेत्रों में महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा।
- महिलाएँ "लाभार्थी" से "नेतृत्वकर्ता" बनीं।
- पारंपरिक पितृसत्तात्मक सोच को चुनौती।

निष्कर्ष
- भारत सरकार की नीतिगत दिशा और बिहार सरकार के व्यावहारिक क्रियान्वयन ने महिलाओं के जीवन में वास्तविक बदलाव लाया है।
- भविष्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सुरक्षित वातावरण से यह बदलाव और गहरा होगा।
- सशक्त महिला ही समावेशी एवं टिकाऊ विकास की आधारशिला है।